तृष्णा

मेले के रंग सास, बहु, और ननद के संग

चित्रकला: जी डी पॉलराज

केवल वयस्कों के लिये

11th June 2017 Edition

Copyright Notice

This story is © Bicks and Trishna 2017. All rights reserved.

Readers are welcome to share or archive this story without modification for personal and non-commercial use.

For republishing enquiries write to the author at trishna321@yahoo.com

Caution

This story is intended for adults only. If you are not an adult or if it is illegal to read it in your dark corner of the world please delete it immediately.

This story describes taboo themes like rape, group sex, orgy, and incest in explicit language. Do not read this story if this is not to your taste.

All characters in this story are 18 years or above.

This is a work of fiction. Any resemblance to reality is purely coincidental. Do not try this at home.

सावधान

यह कहानी केवल वयस्कों को लिये है. यदि आप वयस्क नहीं हैं, या आपके देश में इसे पढ़ना ग़ैर कानूनी है, तो इस उपन्यास को न पढ़ें.

इस कहानी में बलात्कार, सामुहिक सम्भोग, अनाचार, इत्यादि जैसे निषिद्ध विषयों का स्पष्ट भाषा में वर्णन है. यदि आपकी ऐसे विषयों में रुचि नहीं है तो इस कहानी को न पढ़ें.

इस कहानी के सभी किरदार 18 वर्ष या उससे ऊपर के हैं.

यह कहानी पूर्णतया काल्पनिक है. वस्तविकता के साथ इसकी कोई भी समानता संयोग मात्र है. इसे घर पर आजमाने की कोशिश न करें.

भूमिका

प्रिय पाठकों, पेश है कहानी **मेले के रंग सास, बहु, और ननद के संग**. इस कहानी के मूल कथाकार बिक्स हैं जिन्होने Hinglish मे chapter 1 और 2 लिखे थे. मैने उन 2 chapters का देवनागरी मे रूपांतरन किया है. और अपनी तरफ़ से मैने chapter 3 और 4 लिखकर कहानी को समाप्त किया है.

कहानी के पात्र

वीणा - उम्र 22 साल. कहानी की वर्णनकर्ता.
मीना - उम्र 23 साल. वीणा के ममेरे भाई की पत्नी.
गिरिधर - उम्र 45 साल. वीणा के मामाजी और मीना के ससुर.
कौशल्या - उम्र 42 साल. वीणा के मामीजी और मीना की सास.
विश्वनाथ - उम्र 48 साल. मामाजी के मित्र
रमेश, सुरेश, दिनेश, और महेश - चार बदमाश और विश्वनाथजी के मित्र

आशा है आप सबको कहानी पढ़कर आनंद आयेगा.

आपकी तृष्णा

© Bicks and Trishna 2017

मेले के रंग सास, बहु, और ननद के संग - 1

लेखक: बिक्स

प्रिय पाठकों, मेरा नाम वीणा है, उम्र 22 साल, फ़िगर 34/27/35, रंग बहुत गोरा. मैं अपना एक नया अनुभव पेश कर रही हूँ जो मेरे साथ तब हुआ जब मैं अपने मामा, मामी और कज़िन भाभी के साथ मेला देखने गई थी.

बात यूँ थी कि हमारे मामा का घर हाज़िपुर ज़िले मे था. ज़िला सोनपुर मे हर साल, माना हुआ मेला लगता है. हर साल की भांती इस साल भी मेला लगने वाला था. मामा का खत आया कि दीदी, वीणा बिटिया, और नीतु बिटिया को भेज दो. हम लोग मेला देखने जायेंगे. यह लोग भी हमारे साथ मेला देख आयेंगे. पर पापा ने कहा कि तुम्हारी दीदी (यानी कि मेरी मम्मी) का आना तो मुश्किल है और नीतु (यानी की मेरी छोटी बहन) को तो बहुत बुखार है. पर वीणा को तुम आकर ले जाओ, उसकी मेला घूमने की इच्छा भी है.

तो फिर मामा आये और मुझे अपने साथ ले गये. दो दिन हम मामा के घर रहे और फिर वहाँ से मै यानी कि वीणा, मेरे मामीजी, मामा और भाभी मीना (ममेरे भाई की पत्नी) और नौकर रामु, इत्यादि लोग मेले के लिये चल पड़े.

रविवार को हम सब मेला देखने निकल पड़े. हमारा कार्यक्रम 8 दिनों का था. सोनपुर मेले मे पहुँच कर देखा कि वहाँ रहने की जगह नही मिल रही थी. बहुत अधिक भीड़ थी.

मामा को याद आया कि उनके ही गाँव के रहने वाले एक दोस्त ने यहाँ पर घर बना लिया है. सो सोचा कि चलो उनके यहाँ चल कर देखा जाये. हम मामा के दोस्त यानी कि विश्वनाथजी के यहाँ चले गये. उन्होने तुरन्त हमारे रहने की व्यवस्था अपने घर के उपर के एक कमरे मे कर दी. इस समय विश्वनाथजी के अलावा घर पर कोई नही था. सब लोग गाँव मे अपने घर गये हुए थे. उन्होने अपना किचन भी खोल दिया, जिसमे खाने-पीने के बर्तनों की सुविधा थी.

वहाँ पहुँच कर सब लोगों ने खाना बनाया और विश्वनाथजी को भी बुला कर खिलाया. खाना खाने के बाद हम लोग आराम करने गये.

© Bicks and Trishna 2017

जब हम सब बैठे बातें कर रहे थे तो मैने देखा कि विश्वनाथजी की निगाहें बार-बार भाभी पर जा टिकती थी. और जब भी भाभी कि नज़र विश्वनाथजी कि नज़र से टकराती तो भाभी शर्मा जाती थी और अपनी नज़रें नीची कर लेती थी. दोपहर करीब 2 बज़े हम लोग मेला देखने निकले. जब हम लोग मेले मे पहुँचे तो देख कि काफ़ी भीड़ थी और बहुत धक्का-मुक्की हो रही थी.

मामा बोले कि आपस मे एक दूसरे का हाथ पकड़ कर चलो वर्ना कोई इधर-उधर हो गया तो बड़ी मुश्किल होगी. मैने भाभी का हाथ पकड़ा, मामा-मामी और रामु साथ थे.

मेला देख रहे थे कि अचानक किसी ने पीछे से गांड मे उंगली कर दी. मैं एकदम बिदक पड़ी, कि उसी वक्त सामने से किसी ने मेरी चूचि दबा दी. कुछ आगे बढ़ने पर कोई मेरी चूत मे उंगली कर निकल भागा.

मेरा बदन सनसना रहा था. तभी कोई मेरी दोनो चूचियां पकड़ कर कान मे फुसफुसाया - "हाय मेरी जान!" कह कर वह आगे बढ़ गया. हम कुछ आगे बढ़े तो वही आदमी फिर आकर मेरी जांघों मे हाथ डाल मेरी चूत को अपने हाथ के पूरे पंजे से दबा कर मसल दिया. मुझे लड़की होने की गुदगुदी का अहसास होने लगा था. भीड़ मे वह मेरे पीछे-पीछे साथ-साथ चल रहा था, और कभी-कभी मेरी गांड मे उंगली घुसाने की कोशिश कर रहा था, और मेरे चूतड़ों को तो उसने जैसे बाप का माल समझ कर दबोच रखा था.

अबकी धक्का-मुक्की मे भाभी का हाथ छूट गया और भाभी आगे और मै पीछे रह गयी. भीड़ काफ़ी थी और मै भाभी की तरफ़ गौर करके देखने लगी. वह पीछे वाला आदमी भाभी की टांगों मे हाथ डाल कर भाभी की चूत सहला रहा था. भाभी मज़े से चूत सहलवाती आगे बढ़ रही थी. भीड़ मे किसे फ़ुर्सत थी कि नीचे देखे कि कौन क्या कर रहा है. मुझे लगा कि भाभी भी मस्ती मे आ रही है. क्योकि वह अपने पीछे वाले आदमी से कुछ भी नही कह रही थी.

जब मै उनके बराबर मे आयी और उनका हाथ पकड़ कर चलने लगी तो उनके मुंह से "हाय!" की सी आवाज़ निकल कर मेरे कानों मे गूंजी. मै कोई बच्ची तो थी नही, सब समझ रही थी. मेरा तन भी छेड़-छाड़ पाने से गुदगुदा रहा था.

तभी किसी ने मेरी गांड मे उंगली कर दी. ज़रा कुछ आगे बढ़े तो मेरी दोनो बगलों मे हाथ डाल कर मेरी चूचियों को कस कर पकड़ कर अपनी तरफ़ खींच लिया. इस तरह मेरी चूचियों को पकड़ कर खींचा कि देखने वाला समझे कि मुझे भीड़-भाड़ से बचाया है.

शाम का वक्त हो रहा था और भीड़ बढ़ती ही जा रही थी. इतनी देर मे वह पीछे से एक रेला सा आया जिसमे मामा मामी और रामु पीछे रह गये और हम लोग आगे बढ़ते चले गये. कुछ देर बाद जब पीछे मुड़ कर देखा तो मामा मामी और रामु का कहीं पता ही नही था. अब हम लोग घबरा गये कि मामा मामी कहाँ गये.

हम लोग उन्हे ढूँढ रहे थे कि वह लोग कहाँ रह गये और आपस मे बात कर रहे थे कि तभी दो आदमी जो काफ़ी देर से हमे घूर रहे थे और हमारी बातें सुन रहे थे वह हमारे पास आये और बोले, "तुम दोनो यहाँ खड़ी हो और तुम्हारे सास ससुर तुम्हें वहाँ खोज रहे हैं."

भाभी ने पूछा, "कहाँ है वह?" तो उन्होने कहा कि चलो हमारे साथ हम तुम्हे उनसे मिलवा देते है. (भाभी का थोड़ा घूंघट था. उसी घूंघट के अन्दाज़े पर उन्होने कहा था जो कि सच बैठा.)

हम उन दोनो के आगे चलने लगे. साथ चलते-चलते उन्होने भी हमे छोड़ा नही बल्कि भीड़ होने का फ़ायदा उठा कर कभी कोई मेरी गांड पर हाथ फिरा देता तो कभी दूसरा भाभी की कमर सहलाते हुए हाथ उपर तक ले जाकर उसकी चूचियों को छू लेता था. एक दो बार जब उस दूसरे वाले आदमी ने भाभी कि चूचियों को जोर से भींच दिया तो ना चाहते हुए भी भाभी के मुंह से आह सी निकल गयी और फिर तुरन्त ही सम्भालकर मेरी तरफ़ देखते हुए बोली कि "इस मेले मे तो जान की आफ़त हो गयी है! भीड़ इतनी ज़्यादा हो गयी है कि चलना भी मुश्किल हो गया है."

मुझे सब समझ मे आ रहा था कि साली को मज़ा तो बहुत आ रहा है पर मुझे दिखाने के लिये सती सवित्री बन रही है.

पर अपने को क्या ग़म? मै भी तो मज़े ले ही रही थी और यह बात शायद भाभी ने भी ग़ौर कर ली थी. तभी तो वह ज़रा ज़्यादा बेफ़िकर हो कर मज़े लूट रही थी. वह कहते है ना कि हमाम मे सभी नंगे होते हैं. मैने भी नाटक से एक बड़ी ही बेबसी भरी मुसकान भाभी तरफ़ उछाल दी.

इस तरह हम कब मेला छोड़ कर आगे निकल गये पता ही नही चला.

काफ़ी आगे जाने के बाद भाभी बोली, "वीणा हम कहाँ आ गये? मेला तो काफ़ी पीछे रह गया. यह सुनसान सी जगह आती जा रही है. तुम्हारे मामा मामी कहाँ है?"

© Bicks and Trishna 2017

तभी वह आदमी बोला, "वह लोग हमारे घर है. तुम्हारा नाम वीणा है न, और वह तो तुम्हारे मामा मामी है. वह हमे कह रहे थे कि वीणा और वह कहाँ रह गये. हमने कहा कि तुम लोग घर पर बैठो हम उन्हे ढूँढ कर लाते हैं. तुम हमको नही जानती हो पर हम तुम्हे जानते हैं."

यह बात करते हुए हम लोग और आगे बढ़ गये थे. वहाँ पर एक कार खड़ी थी. वह लोग बोले कि, "चलो इसमे बैठ जाओ, हम तुम्हे तुम्हारे मामा मामी के पास ले चलते हैं."

हमने देखा कि कार मे दो आदमी और भी बैठे हुए थे. (और मुझे बाद मे यह बात याद आयी के वह दोनो आदमी वही थे जो भीड़ मे मेरी और भाभी कि गांड मे उंगली कर रहे थे और हमारी चूचियां दबा रहे थे).

जब हमने जाने से इन्कार किया तो उन्होने कहा कि, "घबराओ नही. देखो हम तुम्हे तुम्हारे मामा-मामी के पास ही ले चल रहे है और देखो उन्होने ने ही हमे सब कुछ बता कर तुम्हारी खबर लेने के लिये हमे भेजा है. अब घबराओ मत और कार मे बैठ जाओ तो जल्दी से तुम्हारे मामा- मामी से तुम्हें मिला दें."

कोई चारा ना देख हम लोग गाड़ी मे बैठ गये. उन लोगों ने गाड़ी मे भाभी को आगे कि सीट पर दो आदमीयों के बीच बैठाया और मुझे भी पीछे कि सीट पर बीच मे बिठा कर वह दोनों मुश्टन्डे मेरी अगल-बगल मे बैठ गये.

कार थोड़ी दूर चली कि उनमे से एक आदमी का हाथ मेरी चूचि को पकड़ कर दबाने लगा, और दूसरा मेरी चूचि को ब्लाऊज़ के उपर से ही चूमने लगा.

मैने उन्हे हटाने की कोशिश करते हुए कहा, "हटो यह क्या बद्तमीज़ी है!" तो एक ने कहा "यह बद्तमीज़ी नही है मेरी जान! तुम्हे तुम्हारे मामा से मिलाने ले जा रहे हैं तो पहले हमारे मामाओं से मिलो फिर अपने मामा से."

जब मैने आगे कि तरफ़ देखा तो पाया कि भाभी की ब्लाऊज़ और ब्रा खुली है और एक आदमी भाभी की दोनो चूचियां पकड़े है और दूसरा भाभी की दोनो टांगें फ़ैला कर साड़ी और पेटीकोट कमर तक उठा कर उनकी चूत मे उंगली डाल कर अन्दर बाहर कर रहा है. भाभी इन दोनो की पकड़ से निकलने की कोशिश कर रही है पर निकल नही पा रही है.

© Bicks and Trishna 2017

उनके लीडर ने कहा, "देखो मेरी जान, हम तुम्हे चोदने के लिये लाये हैं और चोदे बिना छोड़ंगे नही. तुम दोनो राज़ी-खुशी से चुदाओगी तो तुम्हे भी मज़ा आयेगा और हमे भी. फिर तुम्हे तुम्हारे घर पहुँचा देंगे. अगर तुम नखरा करोगी तो तुम्हे जबरदस्ती चोदकर जान से मारकर कहीं डाल देंगे."

और मेरी भाभी से कहा कि "तुम तो चुदाई का मज़ा लेती ही रही हो. इतना मज़ा किसी और चीज़ मै नही है. इसलिये चुपचाप खुद भी मज़ा करो और हमे भी करने दो."

इतना सुन कर, और जान के भय से भाभी और मैं दोनो ही शांत पड़ गये. भाभी को शांत होते देख कर वह जो भाभी की टांग पकड़े बैठा था वह भाभी कि चूत चाटने लगा, और दूसरा कस-कस कर भाभी की चूचियां मसल रहा था. भाभी सी-सी करने लगी. भाभी को शांत होते देख मैं भी शांत हो गयी और चुपचाप उन्हे मज़ा देने लग गयी. मेरी भी चूत और चूचि दोनो पर ही एक साथ आक्रमण हो रहा था. मैं भी सिसिया रही थी. तभी मुझे जोरों का दर्द हुआ और मैंने कहा, "हाय यह तुम क्या कर रहे हो?"

"क्यों मज़ा नही आ रहा है क्या मेरी जान?" ऐसा कहते हुए उसने मेरी चूचियों की घुंडी (निप्पल) को छोड़ मेरी पूरी चूचि को भोंपू की तरह दबाने लग गया. मैं एकदम से गनगना कर हाथ पावँ सिकोड़ ली.

दूसरा वाला अब मेरे नितंभो (चूतड़) को सहलाते हुए मेरी गांड की छेद पर उंगली फिरा रहा था.

"चीज़ तो बड़ी उमदा है यार", टांग पकड़ कर मौज करने वाले ने कहा.
"एकदम पूरी देहाती माल है" दूसरे ने कहा.

मैं थोड़ा हिली तो दूसरा वाला मेरी चूचियों को कस कर दबाते हुए मेरे मुंह से हाथ हटा कर जबरदस्ती मेरे होठों पर अपने होंठ रख कर जोर से चुम्बन लिया कि मैं कसमसा उठी. फिर मेरे गालों को मुंह मे भर कर इतनी जोर से दांतों से काटा कि मैं बुरी तरह से छटपटा उठी. ऐसा लग रहा थी कि मेरी मस्त जवानी पा कर दोनो बुरी तरह से पगला गये थे. मैं बुरी तरह छटपटा रही थी.

तभी दूसरे वाले ने मेरी चूत मे उंगली करते हुए कहा, "बड़ी ज़ालिम जवानी है. खूब मज़ा आयेगा. कहो मेरी बुलबुल क्या नाम है तुम्हारा?"

तभी दूसरे वाले ने कहा, "अरे बुद्धू, इसका नाम वीणा है."

उन दोनो मे से एक मेरे नितम्भों मे उंगली करते बैठा था, और दूसरा मेरी चूचियों और गालों का सत्यानाश कर रहा था और मैं डरी-सहमी से हिरनी की भांति उन दोनो की हरकतों को सहन कर रही थी.

वैसे झूठ नही बोलुंगी क्योंकि मज़ा तो मुझे भी आ रहा था. पर उस वक्त डर भी ज़्यादा लग रहा था. मैं दोहरे दबाव मे अधमरी थी. एक तरफ़ शरारत की सनसनी और दूसरी तरफ़ इनके चंगुल मे फंसने का भय.

वह मस्त आंखों से मेरे चहरे को निहार रहे थे और एक साथ मेरी दोनो गदराई चूचियों को दबाते कहा, "चुपचाप हम लोगों को मज़ा नही दोगी तो हम तुम दोनो को जान से मार देंगे. तेरी जवानी तो मस्त है. बोल अपनी मर्ज़ी से मज़ा देगी कि नही?"

कुछ भी हो मैं सयानी तो थी ही, उनकी इन रंगीन हरकतों का असर तो मुझ पर भी हो रहा था.

फिर मैने भाभी कि तरफ़ देखा. आगे वाले दोनो आदमीयों मे से एक मेरी भाभी के गाल पर चमी-बत्के भर रहा था और जो ड्राईवर था वह उनकी चूत मे उंगली कर रहा था. उन दोनो ने मेरी भाभी की एक एक जांघ अपनी जांघ के नीचे दबा रखी थी और साड़ी और पेटीकोट कमर तक उठाया हुआ था. और भाभी दोनो हाथों मे एक-एक लंड पकड़ कर सहला रही थी.

उन दोनो के खड़े मोटे-मोटे लंडो को देख कर मैं डर गयी कि अब क्या होगा.

तभी उनमे से एक ने भाभी से पूछा "कहो रानी मज़ा आ रहा है ना?"

और मैने देखा कि भाभी मज़ा करते हुए नखरे के साथ बोली "ऊंहूं"

तब उसने कहा "पहले तो नखरा कर रही थी, पर अब तो मज़ा आ रहा है ना? जैसा हम कहेंगे वैसा करोगी तो कसम भगवान की पूरा मज़ा लेकर तुम्हे तुम्हारे घर पहुँचा देंगे. तुम्हारे घर किसी को पता भी नही लगेगा कि तुम कहाँ से आ रही हो. और नखरा करोगी तो वक्त भी खराब होगा और तुम्हारी हालत भी और घर भी नही पहूँच पाओगी. जो मज़ा राज़ी-खुशी मे है वह जबरदस्ती

मे नही."

भाभी - "ठीक है हमको जल्दी से कर के हमें घर भिजवा दो."

भाभी की ऐसी बात सुन कर मैं भी ढीली पड़ गयी. मैने भी कहा कि हमे जल्दी से करो और छोड़ दो.

इतने मे ही कार एक सुनसान जगह पर पहुँच गयी और उन लोगों ने हमे कार से उतारा और कार से एक बड़ा सा कम्बल निकाल कर थोड़ी समतल सी जगह पर बिछया और मुझे और भाभी को उस पर लिटा दिया.

अब एक आदमी मेरे करीब आया और उसने पहले मेरी ब्लाऊज़ और फिर ब्रा और फिर बाकी के सभी कपड़े उतार कर मुझे पूरी तरह से नंगा किया और मेरी चूचियों को दबाने लगा. मैं गनगना गयी क्योंकि जीवन मे पहली बार किसी पुरुष का हाथ मेरी चूचियों पर लगा था. मैं सिसिया रही थी. मेरी चूत मे कीड़े चलने लगे थे.

मेरे साथ वाला आदमी भी जोश मे भर गया था, और पगलों के समान मेरे शरीर को चूम चाट रहा था. मेरी चूत भी मस्ती मे भर रही थी. वह काफ़ी देर तक मेरी चूत को निहार रहा था.

मेरी चूत के उपर भूरी-भूरी झांटें उग आयी थी. उसने मेरी पाव-रोटी जैसी फ़ूली हुई चूत पर हाथ फेरा तो मस्ती मे भर उठा और झूक कर मेरी चूत को चूमने लगा, और चूमते-चूमते मेरी चूत के टीट (clitoris) को चाटने लगा. अब मेरी बर्दाश्त के बाहर हो रहा था और मैं जोर से सित्कार रही थी. मुझे ऐसी मस्ती आ रही थी कि मैं कभी कल्पना भी नही की थी.

वह जितना ही अपनी जीभ मेरी कुंवारी चूत पर चला रहा था उतना ही उसका जोश और मेरा मज़ा बढ़ता जा रहा था. मेरी चूत मे जीभ घुसेड़ कर वह उसे चकरघिन्नी की मानिंद घुमा रहा था, और मैं भी अपने चूतड़ उपर उचकाने लगी थी. मुझे बहुत मज़ा आ रहा था. इस आनंद की मैने कभी सपने मैं भी नही कल्पना की थी. एक अजीब तरह की गुदगुदी हो रही थी.

फिर वह कपड़े खोल कर नंगा हो गया. उसका लंड भी खूब लम्बा और मोटा था. लंड एकदम सख्त होकर सांप की भांति फ़ुंफ़्कार रहा था. और मेरी चूत उसका लंड खाने को बेकरार हो उठी.

फिर उसने मेरे चूतड़ों को थोड़ा सा उठा कर अपने लंड को मेरी बिलबिलाती चूत मे कुछ इस तरह से चांपा कि मैं तड़प उठी, चीख उठी और चिल्ला उठी, "हाय!! मेरी चूत फटी!! हाय!! मैं मरी!! आह्ह्ह!! हाय बहुत दर्द हो रहा है ज़ालिम!! कुछ तो मेरी चूत का खयाल करो. अरे निकालो अपने इस ज़ालिम लंड को मेरी चूत मे से. हाय!! मै तो मरी आज!!" और मै दर्द के मारे हाथ-पैर पटक रही थी पर उसकी पकड़ इतनी मज़बूत थी कि मै उसकी पकड़ से छूट न सकि. मेरी कुंवारी चूत को ककड़ी की तरह से चीरता हुआ उसका लंड नश्तर की तरह चुभता गया.

आधे से ज़्यादा लंड मेरी चूत मे घुस गया था. मै पीड़ा से कराह रही थी तभी उसने इतनी जोर से ठाप मारा कि मेरी चूत का दरवाज़ा ध्वस्त होकर गिर गया और उसका पूरा लंड मेरी चूत मे घुस गया. मै दर्द से बिलबिला रही थी और चूत से खून निकल कर बह कर मेरी गांड तक पहुँच गया.

वह मेरे नंगे बदन पर लेट गया और मेरी एक चूचि को मुंह मे लेकर चूसने लगा. मै अपने चूतड़ो को उपर उछालने लगी, तभी वह मेरी चूचियों को छोड़ दोनो हाथ जमीन पर टेक कर लंड को चुत से टोपा तक खींच कर इतनी जोर से ठाप मारा कि पूरा लंड जड़ तक हमारी चूत मे समा गया और मेरा कलेजा थर्थरा उठा. यह क्रिया वह तब तक चलाता रहा जब तक मेरी चूत का स्प्रिंग ढीला नही पड़ गया.

मुझे बाहों मे भर कर वह जोर-जोर से ठाप लगा रहा था. मै दर्द के मारे ओफ़्फ़फ़ उफ़्फ़फ़ कर रही थी. कुछ देर बाद मुझे भी जवानी का मज़ा आने लगा और मै भी अपने चूतड़ उछाल-उछाल कर गपागप लंड अन्दर करवाने लगी. और कह रही थी, "और जोर से राजा! और जोर से पूरा पेलो! और डालो अपना लंड!"

वह आदमी मेरी चूत पर घमासन धक्के मारे जा रहा था. वह जब उठ कर मेरी चूत से अपना लंड बाहर खींचता था तो मै अपने चूतड़ उचका कर उसके लंड को पूरी तरह से अपनी चूत मे लेने की कोशिश करती. और जब उसका लंड मेरी बच्चेदानी से टकराता तो मुझे लगाता मानो मै स्वर्ग मै उड़ रही हूँ.

अब वह आदमी जमीन से दोनो हाथ उठा कर मेरी दोनो चूचियों को पकड़ कर हमें घपाघप पेल रहा था. यह मेरे बर्दाश्त के बाहर था और मै खुद ही अपना मुंह उठा कर उसके मुंह के करीब किया कि उसने मेरे मुंह से अपना मुंह भिड़ा कर अपनी जीभ मेरे मुंह मे डाल कर अन्दर बाहर करने लगा. इधर जीभ अन्दर बाहर हो रही और नीचे चूत मे लंड अन्दर बाहर हो रहा था. इस

दोहरे मज़े के कारण मै तुरन्त ही स्खलित हो गयी और लगभग उसी समय उसके लंड ने इतनी फ़ोर्स से वीर्यपात किया कि मै उसकी छाती से चिपक उठी. उसने भी पुर्ण ताकत के साथ मुझे अपनी छाती से चिपका लिया.

तूफ़ान शांत हो गया. उसने मेरी कमर से हाथ खींच कर बंधन ढीला किया और मुझे कुछ राहत मिली. लेकिन मै मदहोशी मे पड़ी रही.

वह उठ बैठा और अपने साथी के पास गया और बोला, "यार ऐसा गज़ब का माल है प्यारे, मज़ा आ जायेगा. ऐसा माल बड़ी मुश्किल से मिलता है."

मैने मुड़ कर भाभी की तरफ़ देखा. भाभी के उपर भी पहले वाला आदमी चढ़ा हुआ था और उनकी चूत मार रहा था. भाभी भी सी-सी करते हुए बोल रही थी "हाय राजा! ज़रा जोर से चोदो और जोर से हाय!! चूचियां ज़रा कस कर दबाओ ना! हाय मै बस झड़ने वाली हूँ!!" और अपने चूतड़ों को धड़ाधड़ उपर नीचे पटक रही थी.

"हाय मै गयी राजा!" कह कर उन्होने दोनो हाथ फैला दिये.
तभी वह आदमी भी भाभी कि चूचियां पकड़ कर गाल काटते हुए बोला, "मज़ा आ गया मेरी जान!" और उसने भी अपना पानी छोड़ दिया.

कुछ देर बाद वह भी उठा और अपने कपड़े पहन कर बगल मे हट गया. भाभी उस आदमी के हटने के बाद भी आंखें बंद किये लेटी थी और मैने देखा कि भाभी की चूत से उन दोनो का वीर्य और रज बह कर गांड तक आ पहुँचा था.

अब उनका दूसरा साथी मेरे करीब बैठ कर मेरी चूचियों पर हाथ फिराने लगा और बचा हुआ चौथा आदमी अब मेरी भाभी पर अपना नम्बर लगा कर बैठ गया.

उसके बाद हम भाभी ननद की उन दो आदमीयों ने भी चुदाई की. अबकी बार जो आदमी मेरी भाभी पर चढ़ा था उसका लंड बहुत ही ज़्यादा मोटा और लम्बा, करीब 11" का था. पर मेरी भाभी ने उसका लंड भी खा लिया.

चुदाई का दूसरा दौर पूरा होने पर जब हम उठ कर अपने कपड़े पहनने लगे तो उन्होने कहा कि, "पहले तुम दोनो ननद भाभी अपनी नंगी चूचियों को आपस मे चिपका के दिखाओ."

इस पर जब हम शर्माने लगी तो कहा कि, "जितना शर्माओगी उतनी ही देर होगी तुम लोगों को."

तब मेरी भाभी ने उठ कर मुझे अपनी कोली मै भर और मेरी चूचियों पर अपनी चूचियां रगड़ी और निप्पलों से निप्पल मिला कर उन्हे आपस मे दबाया. वह चारों आदमी इस द्रिश्य को देख कर अपने लंडों पर हाथ फिरा रहे थे. मुझे कुछ अटपटा भी लग रह था और कुछ रोमांच भी हो रहा था.

उसके बाद हमने कपड़े पहने और वह लोग हमे अपनी कार मे वापस मेले के मैदान तक ले आये. उन्होने रास्ते मे फिर से हमे धमकाया कि यदि हमने उनकी इस हरकत के बारे मे किसी से कुछ कहा तो वह लोग हमे जान से मार देंगे. इस पर हमने भी उनसे वादा किया कि हम किसी को कुछ नही बतायेंगे.

जब हम लोग मेले के मैदान पर पहुँचे तो सुना कि वहाँ पर हमारा नाम announce कराया जा रहा था और हमारे मामा-मामी मंडप मे हमारा इंतज़ार कर रहे थे. वह चारों आदमी हमे लेकर मंडप तक पहुँचे. हमारे मामा हमे देख कर बिफ़र पड़े कि, "कहाँ थे तुम लोग अब तक? हम 4 घंटे से तुम्हे खोज़ रहे थे."

इस पर हमारे कुछ बोलने से पहले ही उन चार मे से एक ने कहा, "आप लोग बेकार ही नाराज़ हो रहें हैं. यह दोनो तो आप लोगों को ही खोज रही थी और आपके ना मिलने पर एक जगह बैठी रो रही थी. तभी इन्होने हमे अपना नाम बताया तो मैने इन्हे बताया कि तुम्हारे नाम का announcement हो रहा है और तुम्हारे मामा मामी मंडप मे खड़े है. और इन्हे लेकर यहाँ आया हूँ."

तब हमारे मामा बहुत खुश हुए ऐसे शरीफ़(?) लोगों पर और उन्होने उन अजनबीयों का शुक्रिया अदा किया. इस पर उन चारों ने हमे अपनी गाड़ी पर हमारे घर तक छोड़ने कि पेश्कश कि जो हमारे मामा-मामी ने तुरन्त ही कबूल कर ली.

हम लोग कार मे बैठे और घर को चल दिये.

मेले के रंग सास, बहु, और ननद के संग - 2

लेखक: बिक्स

जैसे ही हम घर पहुँचे कि विश्वनाथजी बाहर आये हमसे मिलने के लिये.

संयोग कि बात यह थी कि यह लोग विश्वनाथजी की पहचान वाले थे. इसलिये जैसे ही उन्होने विश्वनाथजी को देखा तो तुरंत ही पूछा, "अरे विश्वनाथजी आप यहां? क्या यह आपका परिवार है?"

तो विश्वनाथजी ने कहा, "अरे नही भाई, परिवार तो नही पर हमारे परम मित्र और एक ही गाँव के दोस्त और उनका परिवार है यह."

फिर विश्वनाथजी ने उन लोगों को चाय पीने के लिये बुलाया और वह सब लोग हमारे साथ ही अन्दर आ गये.

वह चारों बैठ गये और विश्वनाथजी चाय बनाने के लिये किचन पहुँचे. तभी मेरे मामाजी ने कहा "बहू! ज़रा मेहमानों के लिये चाय बना दे."

और मेरी भाभी उठ कर किचन मे चाय बनाने के लिये गयी. भाभी ने सबके लिये चाय चढ़ा दी और चाय बनाने के बाद वह उन्हे चाय देने गयी. तब तक मेरे मामा और मामी उपर के कमरे मे चले गये थे और नीचे के उस कमरे मे उस वक्त वह चारों दोस्त और विश्वनाथजी ही थे.

कमरे मे वह पाँचों लोग बात कर रहे थे जिन्हे मै दरवाज़े के पीछे खड़ी सुन रही थी. मैने देखा कि जब भाभी ने उन लोगों को चाय थमायी तो एक ने धीरे से विश्वनाथजी की नज़र बचा कर भाभी की एक चूचि दबा दी. भाभी "सी" कर के रह गयी और खाली ट्रे लेकर वापस आ गयी.

वह लोग चाय की चुसकी लगा रहे थे और बातें कर रहे थे.

विश्वनाथजी- "आज तो आप लोग बहुत दिनों के बाद मिले हैं. क्यों भाई कहाँ चले गये थे आप लोग? क्यों भाई रमेश! तुम्हारे क्या हाल चाल है?"

© Bicks and Trishna 2017

रमेश- "हाल चाल तो ठीक है, पर आप तो हम लोगों से मिलने ही नही आये. शायद आप सोचते होगे कि हमसे मिलने आयेंगे तो आपका खर्चा होगा."
विश्वनाथजी- "अरे खर्चे की क्या बात है. अरे यार कोई माल हो तो दिलाओ. खर्चे की परवाह मत करो. वैसे भी फ़ैमिली बाहर गयी है और बहुत दिन हो गये है किसी माल को मिले. अरे सुरेश तुम बोलो ना कब ला रहे कोई नया माल?"
सुरेश- "इस मामले मे तो दिनेश से बात करो. माल तो यही साला रखता है."
दिनेश- "इस समय मेरे पास माल कहाँ? इस वक्त तो महेश के पास माल है."
महेश- "माल तो था यार पर कल साली अपने मैके चली गयी है. पर अगर तुम खर्च करो तो कुछ सोचें."
विश्वनाथजी- "खर्चे की हमने कहाँ मनाई की है. चाहे जितना खर्चा हो जाये, लेकिन अकेले मन नही लग रहा है यार. कुछ जुगाड़ बनवाओ."

मै वहीं खड़े-खड़े सब सुन रही थी. तभी मेरे पीछे भाभी भी आकर खड़ी हो गयी और वह भी उन लोगों की बातें सुनने लगी.

सुरेश- "अकेले-अकेले कैसे, तुम्हारे यहां तो सब लोग है."
विश्वनाथजी- "अरे नही भाई यह हमारे बच्चे थोड़ी ही हैं. हमारे बच्चे तो गाँव गये है. यह लोग हमारे गाँव से ही मेला देखने आये है."
महेश- "फिर क्या बात है. बगल मे हसीना और नगर ढिंढोरा! अगर तुम हमारी दावत करो तो इनमे से किसी को भी तुमसे चुदवा देंगे."
विश्वनाथजी- "कैसे?"
महेश- "यार यह मत पूछो कि कैसे, बस पहले दावत करो."
विश्वनाथजी- "लेकिन यार कहीं बात उलटी ना पड़ जाये. गाँव का मामला है. बहुत फ़जीता हो जायेगा."
सुरेश- "यार तुम इसकी क्यों फ़िक्र करते हो? सब कुछ हमारे उपर छोड़ दो."
रमेश- "यार एक बात है, बहु की जो सास (मेरी मामी) है उस पर भी बड़ा जोबन है. यार मै तो उसे किसी भी तरह चोदुंगा."
विश्वनाथजी- "अरे यार तुम लोग अपनी बात कर रहे या मेरे लिये बात कर रहे हो?"
महेश- "तुम कल दोपहर को दावत रखना और फिर जिसको चोदना चाहोगे उसी को चुदवा देंगे, चाहे सास चाहे बहु या फिर उसकी ननद."
विश्वनाथजी- "ठीक है फिर तुम चारों कल दोपहर को आ जाना."

मैने सोचा कि अब हमारी खैर नही. पीछे मुड़कर देखा तो भाभी खड़े-खड़े अपनी चूत खुजला रही है.

मैने कहा, "क्यों भाभी, चूत चुदवाने को खुजला रही हो?"
भाभी- "हाँ ननद रानी, अब आपसे क्या छुपाना! मेरी चूत बड़ी खुजला रही है. मन कर रहा के कोई मुझे पटक कर चोद दे."
मैने कहा, "पहले कहती तो किसी को रोक लेती जो तुम्हे पूरी रात चोदता रहता. खैर कोई बात नही कल शाम तक रुको. तुम्हारी चूत का भोसड़ा बन जायेगा. उन पाँचों के इरादे है हमे चोदने के और वह साला रमेश तो मामीजी को भी चोदना चहता है. अब देखेंगे मामी को किस तरह से चोदते हैं यह लोग."

अगली सुबह जब मैं सो कर उठी तो देखा कि सभी लोग सोये हुये थे. सिर्फ़ भाभी ही उठी हुई थी और विश्वनाथजी का लंड जो कि नींद मे भी तना हुआ था और भाभी गौर से उनके लंड को ही देख रही थी. उनका लंड धोती के अन्दर तन कर खड़ा था, करीब 10" लम्बा और 3" मोटा, एकदम रौड की तरह.

भाभी ने इधर-उधर देख कर अपने हाथ से उनकी धोती को लंड पर से हटा दिया और उनके नंगे लंड को देख कर अपने होठों पर जीभ फिराने लगी. मै भी बेशर्मों की तरह जाकर भाभी के पास खड़ी हो गयी और धीरे से कहा, "उई माँ"!"

भाभी मुझे देख कर शर्मा गयी और घूम कर चली गयी. मै भी भाभी के पीछे चली और उनसे कहा, "देखो कैसे बेहोश सो रहे हैं."
भाभी- "चुप रहो!"
मै- "क्यों भाभी, ज़्यादा अच्छा लग रहा है."
भाभी- "चुप भी रहो ना!"
मै- "इसमे चुप रहने की कौन सी बात है? जाओ और देखो और पकड़ कर मुंह मे भी ले लो उनका खड़ा लंड, बड़ा मज़ा आयेगा."
भाभी- "कुछ तो शर्म करो यूं ही बके जा रही हो."
मे- "तुम्हारी मर्ज़ी, वैसे उपर से धोती तो तुमने ही हटायी है."
भाभी- "अब चुप भी हो जाओ, कोई सुन लेगा तो क्या सोचेगा."

फिर हम लोग रोज़ की तरह काम मे लग गये.

करीब दस बज़े विश्वनाथजी कुछ सामान लेकर आये और हमारे मामा के हाथ मे सामान थमा कर नाश्ते के लिये कहा. और कहा, "आज हमारे चार दोस्त आयेंगे और उनकी दावत करनी है यार. इसलिये यह सामान लाया हुँ भाईया. मुझे तो आता नही है कुछ बनाना. इसलिये तुम्ही लोगों को बनाना पड़ेगा. और हाँ यार तुम पीते तो हो ना?" विश्वनाथजी ने मामाजी से पूछा.

मामा- "नही मै तो नही पीता हूँ यार."
विश्वनाथजी- "अरे यार कभी-कभी तो लेते होगे?"
मामा- "हाँ कभी-कभार की तो कोई बात नही."
विश्वनाथजी- "फिर ठीक है हमारे साथ तो लेना ही होगा."
मामा- "ठीक है देखा जायेगा."

हम लोगों ने सामान वगैरह बना कर तैयार कर लिया. 2 बज़े वह लोग आ गये. मै तो उस फिराक मे लग गयी कि यह लोग क्या बातें करते है.

मामा मामी और भाभी उपर के कमरे मे बैठे थे. मै उन चारों की आवाज़ सुन कर नीचे उतर आयी. वह पाँचो लोग बाहर की तरफ़ बने कमरे मे बैठे थे. मै बराबर वाले कमरे की किवाड़ों के सहारे खड़ी हो गयी और उनकी बातें सुनने लगी.

विश्वनाथजी- "दावत तो तुम लोगों की कर रहा हूँ. अब आगे क्या प्रोग्राम है?"
पहला- "यार ये तुम्हारा दोस्त दारू-वारू पीयेगा कि नही?"
विश्वनाथजी- "वह तो मना कर रहा था पर मैने उसे पीने के लिये मना लिया है."
दूसरा- "फिर क्या बात है! समझो काम बन गया. तुम लोग ऐसा करना कि पहले सब लोग साथ बैठ कर पीयेंगे. फिर उसके गिलास मे कुछ ज़्यादा डाल देंगे. जब वह नशे मे आ जायेगा तब किसी तरह पटा कर उसकी बीवी को भी पिला देंगे और फिर नशे मे लाकर उन सालीयों को पटक-पटक कर चोदेंगे."

प्लान के मुताबिक उन्होने हमारे मामा को आवाज़ लगायी.

हमारे मामा नीचे उतर आये और बोले "राम-राम भाईया!"

मामा भी उसी पंचायत मे बैठ गये अब उन लोगों की गपशप होने लगी.
थोड़ी देर बाद आवाज़ आयी कि, "मीना बहू, गिलास और पानी देना!"

जब भाभी पानी और गिलास लेकर वहाँ गयी तो मैने देखा कि विश्वनाथजी की आंखें भाभी की चूचियों पर ही लगी हुई थी. उन्होने सभी गिलासों मे दारू और पानी डाला पर मैने देखा कि मामाजी के गिलास मे पानी कम और दारू ज़्यादा थी. उन्होने पानी और मंगाया तो भाभी ने लोटा मुझे देते हुए पानी लाने को कहा.

जब मै पानी लेने किचन मे गयी तो महेश तुरन्त ही मेरे पीछे-पीछे किचन मे आया और मेरी दोनो मम्मों को कस कर दबाते हुए बोल- "इतनी देर मे पानी लायी है, चूतमरानी? ज़रा जल्दी-जल्दी लाओ."

मेरी सिसकारी निकल गयी.

विश्वनाथजी ने मामाजी से पूछा, "वह तुम्हारा नौकर कहाँ गया?"
मामा- "वह नौकर को यहाँ उसके गाँव वाले मिल गये थे. सो उन्ही के साथ गया है. जब तक हम वापस जायेंगे तब तक मे वह आ जायेगा."

फिर जब तक हम लोगों ने खाना लगाया तब तक मे उन्होने दो बोतल खाली कर दी थी. मैने देखा कि मामा कुछ ज़्यादा नशे मे है. मैं समझ गयी कि उन्होने जान बूझ कर मामा को ज़्यादा शराब पिलायी है.

हम लोग खाना लगा ही चुके थे. मामीजी सबज़ी लेकर वहाँ गयी. मै भी पीछे-पीछे नमकीन लेकर पहुँची तो देखा कि रमेश ने मामीजी का हाथ थाम कर उन्हे दारू का गिलास पकड़ाना चाहा.

मामीजी ने दारू पीने से मन कर दिया. मै यह देख कर दरवाज़े पर ही रुक गयी. जब मामीजी ने दारू पीने से मना किया तो रमेश मामाजी से बोला- "अरे यार कहो ना अपनी घरवाली से! वह तो हमारी बेइज़्ज़ती कर रही है."
मामा ने मामी से कहा "कौशल्या, पी लो ना क्यों बेइज़्ज़ती कर रही हो?"
मामीजी- "मै नही पीती."
रमेश- "भईया यह तो नही पी रही है, अगर आप कहें तो मै पिला दूं?"
मामा- "अगर नही पी रही है तो साली को पकड़ कर पिला दो!"

मामाजी का इतना कहना था कि रमेश ने वहीं मामीजी की बगल मे हाथ डाल कर दूसरे हाथ से दारू भरे गिलास को मामीजी के मुंह से लगा दिया और मामीजी को जबरदस्ती दारू पीनी पड़ी.

मैने देखा कि उसका जो हाथ बगल मे था उसी से वह मामीजी की चूचियां भी दबा रहा था. और जब वह इतनी बेफ़िक्री से मामीजी के बोबे दबा रहा था तो बाकी सभी की नज़रें (सिवाय मामाजी के) उसके हाथ से दबते हुए मामीजी के बोबों पर ही थी. यहाँ तक कि उनमे से एक ने तो गंदे इशारे करते हुए वहीं पर अपना लंड पैंट के उपर से ही मसलना शुरु कर दिया था.

मामीजी के मुंह से गिलास खाली करके मामीजी को छोड़ दिया. फिर जब मामीजी किचन मे आयी तो मैने जान बुझ कर मेरे हाथ मे जो सामान था वह मामीजी को पकड़ा दिया.

मामीजी ने वह सामान टेबल पर लगा दिया. फिर रमेश मामीजी के मना करने पर भी दूसरा गिलास मामीजी को पिला दिया. मामीजी मना करती ही रह गयी पर रमेश दारू पिला कर ही माना. और इस बार भी वही कहानी दोहरायी गयी. यानी कि एक हाथ दारू पिला रहा था और दूसरा हाथ मम्मे दबा रहा था और सब लोग इस नज़ारे को देख कर गरम हो रहे थे.

मामाजी की शायद किसी को परवाह ही नही थी क्योंकि वह तो वैसे भी एकदम नशे मे टुन्न हो चुके थे.

अब गिलास रख कर रमेश ने मामीजी के चूतड़ों पर हाथ फिराया और दूसरे हाथ से उनकी चूत को पकड़ कर दबा दिया. मामीजी सिसकी लेकर रह गयी.

मामीजी को सिसकारी लेते देख कर मेरी भी चुत मे सुरसुरी होने लगी.

हम लोग उपर चले गये. फिर नीचे से पानी की आवाज़ आयी. मामीजी पानी लेकर नीचे गयी. तब तक रमेश किचन मे आ पहुँचा था. मामीजी जो पानी देकर लौटी तो रमेश ने मामीजी का हाथ पकड़ कर पास के दूसरे कमरे मे ले जाने लगा.

मामीजी ने कहा, "अरे ये क्या कर रहे हो?" तो वह बोला, "चलो मेरी रानी, उस कमरे चल कर मज़ा उठाते हैं."

© Bicks and Trishna 2017

मामीजी खुद नशे मे थीं इसलिये कमज़ोर पड़ गयी और ना-ना करती ही रह गयी. पर रमेश उन्हे खींच कर उस कमरे मे ले गया.

मेरी नज़र तो उन दोनो पर ही थी इसलिये जैसे ही वह कमरे मे घुसे मैं तुरन्त दौड़ते हुए उनके पीछे जाकर उस कमरे के बाहर छुप कर देखने लगी कि आगे क्या होता है.

रमेश ने मामीजी को पकड़ कर पलंक पर डाल दिया और उनके पेटीकोट मे हाथ डाल कर उनकी चूत मे उंगली करने लगा.

मामीजी- "हाय, यह क्या कर रहे हो. छोड़ो मुझे नही तो मै चिल्लाऊंगी!"
रमेश- "मेरा क्या जायेगा, चिल्लाओ जोर से! बदनामी तो तुम्हारी ही होगी. नही तो चुपचाप जो मैं करता हूँ वह करवाती रहो!"
मामीजी- "पर तुम करना क्या चाहते हो?"
रमेश- "चुप रहो! तुम्हे क्या मालूम नही है कि मै क्या करने जा रहा हूँ? साली अभी तुझे चोदूंगा. चिल्लायी तो तेरे सभी रिश्तेदार यहाँ आ के तुझे नंगी देखेंगे और सोचेंगे कि तू ही हमे यहाँ अपनी चूत मरवाने बुलायी है".

डर के मारे मामीजी चुपचाप पड़ी रहीं और रमेश ने अपने सारे कपड़े उतार कर अपने खड़े लंड का ऐसा जोर का ठाप मारा कि उसका आधा लंड मामीजी की चुत मे घुस गया.

मामीजी- "उइइइ माँ मै मरी!"

मामीजी नशे मे होते हुए भी सिसकीयाँ ले रही थी. तभी रमेश ने दूसरा ठाप भी मारा कि उसका पूरा लंड अन्दर घुस गया.

मामीजी "उईई माँ!! अरे ज़ालिम क्या कर कर रहा है? थोड़ा धीरे से कर!" कहती ही रह गयी और वह इंजन के पिस्टन की तरह मामीजी की चूत (जो कि पहले ही भोसड़ा बनी हुई थी) उसके चीथड़े उड़ाने लगा.

इतने मे मैने विश्वनाथजी को उपर की तरफ़ जाते देखा. मै भी उनके पीछे उपर गयी और बाहर से देखा कि भाभी जो कि अपना पेटीकोट उठा कर अपनी चूत मे उंगली कर रही थी, उसका हाथ पकड़ कर विश्वनाथजी ने कहा, "हाय मेरी जान! हम काहे के लिये हैं? क्यों अपनी उंगली से काम

चला रही है? क्या हमारे लंड को मौक नही दोगी?"

अपनी चोरी पकड़े जाने पर भाभी की नज़रें झुक गयी थी और वह चुपचाप खड़ी रह गयी.

विश्वनाथजी ने भाभी को अपने सीने से लगा कर उनके होठों को चूसना शुरु कर दिया. साथ ही साथ वह उनकी चूचियों को भी दबा रहे थे. भाभी भी अब उनके वश मे हो चुकी थी. उन्होने अपनी धोती हटा कर अपना लंड भाभी के हाथों मे पकड़ा दिया. भाभी उनके लंड को, जो कि बांस की तरह खड़ा हो चुका था, सहलाने लगी. उन्होने भाभी की चूचियां छोड़ कर उनके सारे कपड़े उतार दिये और भाभी को वहीं पर लिटा दिया और उनके चूतड़ के नीचे तकिया लगा कर अपना लंड उनकी चूत के मुहाने पर रख कर एक जोरदार धक्का मारा.

पर कुछ विश्वनाथजी का लंड बहुत बड़ा था और कुछ भाभी की चुत बहुत सिकुड़ी थी. इसलिये उनका लंड अन्दर जाने के बज़ाय वहीं अटक कर रह गया. इस पर विश्वनाथजी बोले, "लगाता है कि तेरे आदमी का लंड साला बच्चों की लुल्ली जितना है. तभी तो तेरी चुत इतनी टाईट है कि लगाता है जैसे बिनचुदी चुत मे घुसाया है लंड."

और फिर इधर उधर देख कर वहीं कोने मे रखी घी की कटोरी देख कर खुश हो गये और बोले, "लगता है साली चूतमरानी ने पूरी तयारी कर रखी थी और इसलिये यहाँ पर घी की कटोरी भी रखी हुई है जिससे कि चुदवाने मे कोई तक्लीफ़ ना हो!"

इतना कह कर उन्होने तुरन्त ही पास रखी घी की कटोरी से कुछ घी निकाला और अपने लंड पर घी चुपड़ कर तुरन्त फिर से लंड को चूत पर रख कर धक्का मारा. इस बार लंड तो अन्दर घुस गया पर भाभी के मुंह से जोरो कि चीख निकल पड़ी, "आह्ह्ह मै मरी!! हाय ज़ालिम तेरा लंड है या बांस का खुंटा!"

इसके बाद विश्वनाथजी फ़ौर्म मे आ गये और तबाड़-तोड़ धक्के मारने लगे.

भाभी "है राजा मर गयी! उइइइइ माँ! थोड़ा धीमे करो ना!" करती ही रह गयी और वह धक्के पे धक्के मारे जा रहे थे. रूम मे हचपच हचपच की ऐसी आवाज़ आ रही थी मानो 110 की.मी. की रफ़तार से गाड़ी चल रही हो.

कुछ देर के बाद भाभी को भी मज़ा आने लगा और वह कहने लगी, "हाय राजा और जोर से मारो

मेरी चुत! हाय बड़ा मज़ा आ रहा है! आह्ह्ह बस ऐसे ही करते रहो आह्ह्ह!! आउच!! और जोर से पेलो मेरे राजा!! फाड़ दो मेरी बुर को आह्ह्ह्ह!! पर यह क्या मेरी चूचियों से क्या दुशमनी है? इन्हे उखाड़ देने का इरादा है क्या? हाय! ज़रा प्यार से दबाओ मेरी चूचियों को!"

मैने देखा कि विश्वनाथजी मेरी भाभी की चूचियों को बड़ी ही बेदर्दी से किसी होर्न की तरह दबाते हुए घचाघच पेले जा रहे थे.

तब पीछे से सुरेश ने आकर मेरे बगल मे हाथ डाल कर मेरी चूचियां दबाते हुए बोला, "अरी छिनाल, तुम यहाँ इनकी चुदाई देख कर मज़े ले रही और मै अपना लंड हाथ मे लिये तुम्हे सारे घर मे ढूँढ रहा था!"

इधर मेरी भी चूत भाभी और मामीजी की चुदाई देख कर पनिया रही थी. मुझे सुरेश बगल वाले कमरे मे उठा ले गया और मेरे सारे कपड़े खींच कर मुझे एकदम नंगा कर दिया, और खुद भी नंगा हो गया. फिर मुझे बेड पर लेटा कर मेरी दोनों चूचियां सहलाने लगा, और कभी मेरे निप्पल को मुंह मे लेकर चूसने लगाता. इन सबसे मेरी चूत मे चींटीयाँ सी रेंगने लगी, और बुर की पुटिया (clitoris) फड़्फाड़ने लगी.

उसने मेरा हाथ पकड़ कर अपने खड़े लंड पर रखा और मै उसके लंड को सहलाने लगी. मैं जैसे-जैसे उसके लंड को सहला रही थी वैसे ही वह एक लोहे के रौड की तरह कड़क होता जा रहा था. मुझसे बर्दाश्त नही हो रहा था और मै उसके लंड को पकड़ कर अपनी चूत से भिड़ा रही थी कि किसी तरह से ये ज़ालिम मुझे चोदे, और वह था कि मेरी चुत को उंगली से ही कुरेद रहा था.

शरम छोड़ कर मै बोली, "हाय राजा! अब बर्दाश्त नही हो रहा है! जल्दी से करो ना!"

मेरे मुंह से सिसकारी निकल रही थी. अंत मे मै खुद ही उसका हाथ अपनी बुर से हटा कर उसके लंड पर अपनी चुत भिड़ा कर उसके उपर चढ़ गयी और अपनी चुत के घस्से उसके लंड पर देने लगी. उसके दोनो हाथ मेरे मम्मों को कस कर दबा रहे थे और साथ मे निप्पल भी छेड़ रहे थे. अब मै उसके उपर थी और वह मेरे नीचे. वह नीचे उचक-उचक कर मेरी बुर मे अपने लंड का धक्का दे रहा था और मै उपर से दबा-दबा कर उसका लंड सटक रही थी.

कभी कभी तो मेरी चूचियों को पकड़ कर इतनी जोर से खींचता कि मेरा मुंह उसके मुंह तक पहुँच जाता और वह मेरे होंठ को अपने मुंह मे लेकर चूसने लगाता. मैं जन्नत मे नाच रही थी और

मेरी चुत मे खुजलाहट बढ़ती ही जा रही थी. मैं दबा दबा कर चुदा रही थी और बोल रही थी, "हाय मेरे चोदू सईयाँ! और जोरो से चोदो मेरी फुद्दी! भर दो अपने मदन रस से मेरी फुद्दी! आहहह!! बड़ा मज़ा आ रहा है! बस इसी तरह से लगे रहो! हाय! कितना अच्छा चोद रहे हो, बस थोड़ा सा और! मै बस झड़ने ही वाली हूँ! और थोडा धक्का मारो मेरे सरताज़!! आह!! लो मै गयी! मेरा पानी निकला..."

और इस तरह मेरी चूत ने पानी छोड़ दिया. मुझे इतनी जल्दी झड़ते देख, सुरेश खुब भड़क गया और बोला, "साली चूतमरानी, मुझसे पहले ही पानी छोड़ दिया, अब मेरा पानी कहाँ जायेगा?"

सुरेश - "अब तेरी पिलपिलि चुत मे क्या रखा है. क्या मज़ा अयेगा भरी चुत मे पानी निकलने का? अब तो तेरी गांड मे पेलुंगा."

और उसने तुरन्त अपने लंड को मेरी बुर से बाहर खींच और मुझे नीच गिरा कर कुत्ती बनाया और मेरे उपर चढ़ कर मेरी गांड चिदोर कर अपना लंड गांड के छेद पर रख कर जोर का ठाप मारा. बुर के रस मे भीगे होने के कारण उसके लंड का टोपा फट से मेरी गांड मे घुस गया और मै एकदम से चीख पड़ी. "उउउउइइइइइ माँ! मर गयी, हाय निकालो अपना लंड मेरी गांड फट रही है!!"

तब उसने दूसरी ठाप मेरी गांड पर मारी और उसका आधे से ज़्यादा लंड मेरी गांड मे घुस गया. और मै चिल्ला उठी "अरे राम!! थोड़ा तो रहम खाओ, मेरी गांड फटी जा रही है रे ज़ालिम! थोड़ा धीरे से, अरे बदमाश अपना लंड निकाल ले मेरी गांड से नही तो मैं मर जाऊंगी आज ही!"

सुरेश- "अरी चुप्प! साली छिनाल, नखरा मत कर नही तो यहीन पर चाकु से तेरी चुत फाड़ दूंगा, फिर ज़िन्दगी भर गांड ही मरवाते रहना! थोड़ी देर बाद खुद ही कहेगी कि हाय मज़ा आ रहा है, और मारो मेरी गांड."

और कहते के साथ ही उसने तीसरा ठाप मारा कि उसका लंड पूरा का पूरा समा गया मेरी गांड मे. मेरी आंखों से आंसू निकल रहे थे और मै दर्द को सह नही पा रही थी. मैं दर्द के मारे बिलबिला रही थी. मै अपनी गांड को इधर-उधर झटका मार रही थी किसी तरह उसका हल्लबी लंड मेरी गांड से निकल जाये. लेकिन उसने मुझे इतना कस के दबा रखा था कि लाख कोशिशों के बावज़ूद भी उसका लंड मेरी गांड से निकल नही पाया.

अब उसने अपना लंड अन्दर-बाहर करना शुरू किया. वह बहुत धीरे-धीरे धका मार रहा था, और कुछ ही मिनटों मे मेरी गांड भी उसका लंड करने लगी. धीरे-धीरे उसकी स्पीड बढ़ती ही जा रही थी, और अब वह ठापाठप किसी पिस्टन की तरह मेरी गांड मे अपना लंड पेल रहा था. मुझे भी सुख मिल रहा था, और अब मै भी बोलने लगी, "हाय मज़ा आ रहा है! और जोर से मारो, और मारो और बना दो मेरी गांड का भुर्ता! और दबाओ मेरे मम्में, और जोर दिखाओ अपने लंड का और फाड़ दो मेरी गांड. अब दिखाओ अपने लंड की ताकत!"

सुरेश- "हाय जानी, अब गया, अब और नही रुक सकता! ले साली रण्डी, गांडमरानी, ले मेरे लंड का पानी अपनी गांड मे ले!" कहते हुए उसके लंड ने मेरी गांड मे अपने वीर्य की उलटी कर दी. वह चूचियां दाबे मेरी कमर से इस तरह चिपक गया था मानो मीलों दौड़ कर आया हो.

थोड़ी देर बाद उसका मुर्झाया हुआ लंड मेरी गांड मे से निकल गया और वह मेरी चूचियां दबाते हुए उठ खड़ा हुआ, और मुझे सीधा करके अपने सीने से सटा कर मेरे होठों की पप्पी लेने लगा.

तभी महेश आकर बोला, "अबे किसी और का नम्बर आयेगा या नही? या सारा समय तू ही इसे चोदता रहेगा?"
सुरेश- "नही यार तू ही इसे सम्भाल अब मै चला."

यह कह कर सुरेश ने मुझे महेश की तरफ़ धकेला और बाहर चला गया.

महेश ने तुरन्त मुझे अपनी बाहों मे समा लिया और मेरे गाल चुमने लगा. और एक गाल मुंह मे भर कर दांत गाड़ने लगा जिससे मुझे दर्द होने लगा और मै सिसिया उठी.

वह मेरी दोनो चूचियों को कस कर भोंपु की तरह दबाने लगा. कहा "मेरी जान मज़ा आ रहा है कि नही?" और मुझे खींच कर पलंक पर लेटा दिया और अपने सारे कपड़े उतार कर मेरे पास आया, और वहीं जमीन पर पड़ा हुआ मेरी पेटीकोट उठा कर मेरी बुर पोंछते हुए कभी मेरे गालों पर काटने लगा और मेरी चूचियां जोरो से दबा देता.

जैसे-जैसे वह मेरे मम्मों की पम्पिंग कर रहा था, वैसे ही उसका लंड खड़ा हो रहा था मानो कोई उसमे हवा भर रहा हो.

उसने मेरा हाथ पकड़ कर अपने लंड पर रखा और मुझे अपना लंड सहलाने का इशरा किया. मैने

अपना हाथ उसके लंड से हटा लिया तो उसने पूछा, "मेरी जान अच्छा नही लगा रहा है क्या?"

मै छिनारा करते हुए बोली, "नही यह बात नही है पर हमको शर्म आ रही है!"
वह बोला, "चूतमरानी, भोसड़ीवाली, दो दिनों से चूत मरवा रही है, और अब कहती है कि शर्म आ रही है! मादरचोद, चल अच्छे से लंड सहला नही तो तेरी बुर मे चाकू घोंप कर मार डालुंगा!"

मैं डर कर उसके लंड को सहलाने लगी. जैसे-जैसे लंड सहला रही थी मुझे आभास होने लगा कि महेश का लंड सुरेश के लंड से करीब आधा इन्च मोटा और 2 इन्च लम्बा है. मैने भी सोच जो होगा देखा जायेगा. उसका लंड एक लोहे के रौड की तरह कड़ा हो गया था.

अब वह खड़ा होकर पास पड़ा तकिया उठा कर मेरे चूतड़ों के नीचे लगाया और फिर ढेर सारा थूक मेरी बुर के मुहाने पर लगा कर अपना लंड मेरी चूत के मुंह पर रख कर जोर का धक्का मारा. उसका आधे से ज़्यादा लंड मेरी बुर मे घुस गया.

मै सिसिया उठी. जबकी मै कुछ ही देर पहले सुरेश से चूत और गांड दोनों मरवा चुकि थी फिर भी मेरी बुर बिलबिला उठी. उसका लंड मेरी बुर मे बड़ा कसा-कसा जा रहा था. फिर दुबारा ठाप मारा तो पूरा लंड मेरी बुर मे समा गया.

मैं जोरो से चिल्ला उठी, "हाय मै दर्द से मरी.....दर्द हो रहा है!! प्लीज थोड़ा धीरे डालो! मेरी बुर फटी जा रही है!!"

महेश- "अरे चुप साली, तबियत से चुदवा नही रही है और हल्ला कर रही है, मेरी फटी जा रही है, जैसे कि पहली बार चुदवा रही है. अभी-अभी चुदवा चुकी है चूतमरानी और हल्ला कर रही है जैसे कोई सील बन्द कुंवारी लड़की हो."

अब वह मुझे पकड़ कर धीरे-धीरे अपना लंड मेरी चूत के अन्दर बाहर करने लगा. मेरी बुर भी पानी छोड़ने लगी. बुर भीगी होने के कारण लंड बुर मे आराम से अन्दर बाहर जाने लगा, और मुझे भी मज़ा आने लगा.

महेश ने मुझे पलटी देकर अपने उपर किया और नीचे से मुझे चोदने लगा. जब वह नीचे से उपर उचक कर अपने लंड को मेरी बुर मे ठांसता था तो मेरी दोनो चूचियां पकड़ कर मुझे नीचे की ओर खींचता था जिससे लंड पूरा चुत के अन्दर तक जा रहा था. इस तरह से वह चोदने लगा और

साथ-साथ मेरे मम्मे भी पम्पिंग कर रहा था, और कभी मेरे गालों पर बटका भर लेता था तो कभी मेरे निप्पल अपने दांतों से काट खाता था. पर जब वह मेरे होठों को चूसता तो मै बेहाल हो जाती थी और मुझे भी खूब मज़ा आता था.

मैं मज़े मे बड़बड़ा रही थी - "हाय मेरे राजा!! मज़ा आ रहा है, और जोर से चोदो और बना दो मेरी चुत का भोसड़ा!!"

और साथ ही मैने भी अपनी तरफ़ से धक्के मारना शुरू कर दिया, और जब उसका लंड पुर मेरी बुर के अन्दर होता था तो मै बुर को और कस लेती थी. जब लंड बाहर आता था तो बुर को ढीला छोड़ देती थी. वह कुछ रुक-रुक कर मुझे चोद रहा था.

मे बोली "हाय राजा ज़रा जल्दी-जल्दी करो ना, और मज़ा आयेगा, इतना धीरे क्यों मार रहे हो मेरी चुत?"

जब मुझसे रहा नही गया तो मे खुद ही उपर से अपनी कमर के धक्के उसके लंड पर मारने लगी.

इतनी देर मे देखा कि दूसरे रूम से विश्वनाथजी नंगे ही मेरी प्यारी भाभी की चुत, जिसे अब भोसड़ा कहना ज्यादा ठीक होगा, चोद कर हमारे रूम मे घुसे और मुझे चुदता हुआ देखा कर बोले "यहाँ चुत मरा रही, साली ननद रानी, इसकी भाभी को तो पेल कर आ रहा हूँ. चलो इससे भी लंड चुसवा लूँ! क्या याद रखेगी कि एक साथ दो-दो लंड मिले थे इसे."

और इतना कह कर तुरन्त मेरे पास आकर खड़े हुए और अपना लंड, जो कि तब पूरी तरह से खड़ा नही था, मेरे मुंह मे घुसा दिया.

मैने भी पूरा मुंह खोल कर उनके लंड को अन्दर किया और फिर धक्को की ताल पर ही उसे चूसने लगे. विश्वनाथजी साथ-साथ मे मेरी चूचियां भी मसल रहे थे. कुछ ही देर मे उनका लंड भी पुर खड़ा हो गया और मुझे अपने हलक मे फंसता हुआ सा मेहसूस होने लगा. पर मैने उनका लंड छोड़ा नही और बराबर चूसती ही रही. यह पहली बार था कि मेरी बुर और मुंह मे एक साथ दो-दो लंड थे और मै इसका पूरा मज़ा लेना चाहती थी, और मुझे मज़ा भी बहुत आ रहा था इस दोहरी चुदाई और चुसाई मे.

कुछ ही देर मे महेश के लंड ने पानी छोड़ दिया और उसके कुछ ही पलों बाद विश्वनाथजी के लंड

ने भी मेरे मुंह मे पानी की धार छोड़ दी. जब मैने उनके लंड को मुंह से निकालना चाहा तो उन्होने कस कर मेरे चहरे को अपने लंड पर दाबे रखा और जब तक मै पूरा वीर्य पी नही गयी उन्होने मुझे छोड़ा नही. इसके बाद वह भी निढाल से वहीं पर पड़ गये.

चुदाई और चुसाई का यह प्रोग्राम रात भर इसी तरह चलता रहा और ना जाने मै और भाभी और मामीजी कितनी बार चुदे होंगे उस रात.

अंत मे थक हार कर हम सभी यूँ ही नंगे ही सो गये.

सुबह मेरी आंख खुली तो देखा कि मै नंगी ही पड़ी हुई हूँ. मैं जल्दी से उठी और कपड़े पहन कर बाहर किचन की तरफ़ गयी तो देखा कि भाभी भी नंगी ही पड़ी हुई हैं. मुझे मस्ती सुझी और मे करीब ही पड़ा बेलन उठा कर उस पर थोड़ा सा तेल लगा कर उनकी बुर मे घोंप दिया. बेलन का उनकी चुत मे घुसना था कि वह आह!! करते हुए उठ बैठी, और बोली "यह क्या कर रही हो?"

मैं बोली "मैं क्या कर रही हूँ, तुम चुत खोले पड़ी थी मै सोची तुम चुदासी हो, और चोदने वाले तो कब के चले गये, इसलिये तुम्हारी बुर मे बेलन लगा दिया."

भाभी- "तुम्हे तो बस यही सूझता रहता है".

मैने उनकी बुर से बेलन खींच कर कहा "चलो जल्दी उठो, वर्ना मामा मामी आ जायेंगे तो क्या कहेंगे. रात तो खुब मज़ा लिया, कुछ मुझे भी तो बताओ क्या किया?"

भाभी- "बाद मे बताऊंगी कि क्या किया" कह कर कपड़े पहनने लगी तो मै मामीजी को उठाने चली गयी.

मामी भी मस्त चुत खोले पड़ी थी. मैने उनकी चूचियों पर हाथ रख कर उन्हे हिलाया और उठाया और कहा, "मामी यह तुम कैसे पड़ी हो! कोई देखेगा तो क्या सोचेगा?"

वह जल्दी से उठी और कपड़े पहनने लगी. फिर मेरे साथ ही बाहर निकल गयी.

मामा उलटे मुंह किये सो रहे थे और उधर विश्वनाथजी भी मामा के पास ही पड़े हुए थे. ऐसा

मालूम होता था मानो रात को कुछ हुआ ही नही था. सब लोग उठ कर फारिग हुए और खाना बनाया और खाना खाया. खाना खाते हुए विश्वनाथजी कभी मुझे और कभी भाभी को घूर कर देख रहे थे.

मै बोली, "भाभी विश्वनाथजी ऐसे देख रहे हैं कि मानो अभी फिर से तुम्हे चोद देंगे."
भाभी- "मुझे भी ऐसा ही लग रहा है. बताओ अब क्या किया जाये."
मै बोली- "किया क्या जाये, चुप रहो, चुदवाओ और मज़ा लो."
भाभी- "तुम्हे तो हर वक्त चुदाई के सिवाये और कुछ सूझता ही नही है."
मै बोली- "अच्छा! बन तो ऐसी शरीफ़जादी रही ही हो जैसे कभी चुदावाया हि नही हो! चार दिनों से लौड़ों का पीछा ही नही छोड़ रही और यहाँ अपनी शराफ़त की माँ चुदा रही हो."
भाभी- "अब बस भी करो! मैने गलती की जो तुम्हारे सामने मुंह खोला. चुप करो नही तो कोई सुन लेगा."

और इस तरह हमारी नोंक-झोंक खत्म हुई.

अगले दिन हमारी मामीजी ने कहा कि उनके पीहर के यहाँ से बुलावा आया है और वह दो दिन के लिये वहाँ जाना चाहती हैं. इस पर मामाजी बोले, "भाई मैं तो काफ़ी थका हुआ हूँ और वहाँ जाने की मेरी कोई इच्छा नही है."

विश्वनाथजी तो जैसे मौका ही तलाश कर रहे थे मामीजी के साथ जाने का, (या फिर मामी को चोदने का चांस पाने का क्योंकि कल के दिन विश्वनाथजी मामी को चोद नही पाये थे.) तुरन्त ही बोले, "कोई बात नही भाईसाहब, मैं हूँ ना! मैं ले जाऊंगा भाभीजी को उनके मैके और दो दिन बिता कर हम वहाँ से वापस यहाँ पर आ जायेंगे."

विश्वनाथजी की यह बेताबी देख कर भाभी और मैं मुंह दबा कर हंस रहे थे. जानते थे कि विश्वनाथजी मौका पाते ही मामीजी की चुदाई जरूर करेंगे. और सच पूछो तो मामीजी भी जरूर उनसे चुदवाना चाह रही होंगी इसलिये एक बार भी ना-नुकुर किये बिना तुरन्त ही मान गयी."

अब हमारी मामी और विश्वनाथजी के जाने के बाद हमारे लिये रास्ता एक दम साफ़ था.

शाम के वक्त हम तीनो याने मै, मेरी भाभी और हमारे मामाजी घूमने निकले. याने कि मेला

देखने (और मेला देखने के बहाने अपनी चूचि गांड और चूत मसलवाने) निकले.

© Bicks and Trishna 2017

मेले के रंग सास, बहु, और ननद के संग - 3

लेखिका: तृष्णा

शाम के वक्त हम तीनो यानी मै, मेरी भाभी और हमारे मामाजी घूमने निकले. यानी कि मेला देखने (और मेला देखने के बहाने अपनी चूची, गांड और चूत मसलवाने) निकले.

भाभी मुझे फिर से भीड़-भाड़ मे ले गयी. मामाजी पीछे पीछे चल रहे थे और कहते ही रह गये कि हम ज्यादा भीड़ मे न जायें नही तो पिछली बार की तरह फिर खो जायेंगे. जल्दी ही मामाजी भीड़ मे काफ़ी पीछे रह गये.

मैं तो भाभी के इरादे समझ रही थी. पिछली रात की जबर्दस्त चुदाई के बाद हम दोनो की प्यास कम होने के बजाय बढ़ गयी थी. शायद वह इस उम्मीद मे थी कि पिछली बार की तरह चूची, चूत, और गांड मसलवाने के साथ हो सके तो सामुहिक बलात्कार का भी मज़ा मिल जाये.

मैने भाभी से पूछा, "क्या भाभी, उस दिन के बलात्कार की याद आ रही है, जो फिर से भीड़ मे जा रही हो?"
भाभी मुझे चूंटी काटकर बोली, "चुप भी करो! बाबूजी पीछे पीछे आ रहे हैं. सुनेंगे तो क्या सोचेंगे?"
मैने भी भाभी को चूंटी काटा और कहा, "यही सोचेंगे कि कितनी छिनाल है उनकी बहु, और हो सकता है वह भी तुम पर हाथ साफ़ करने की कोशिश करें."
भाभी ने मुँह बनाया और कहा, "उफ़्फ़! तुमको तो कुछ कहना ही बेकार है! मेरे साथ साथ चलती रहो और मुँह बन्द करके मज़े लेती रहो."

मैने भाभी की सलाह मान ली. जल्दी ही भीड़ मे कुछ आदमी हमारे पीछे पड़ गये और भीड़ का फ़ायदा उठाकर कभी हमारे गांड तो कभी हमारी चूची दबा देते थे. एक आदमी मेरे बगल बगल मे चल रहा था और एक हाथ से मेरी एक चूची दबा रहा था और दूसरे हाथ से मेरी गांड दबा रहा था. इससे मुझे जवानी की मस्ती चढ़ने लगी. मामाजी मुझे मज़ा लेते हुए देख न लें इसलिये मैं भीड़ मे उनसे और भाभी से थोड़ा अलग हो गयी.

अब मैं आराम से अपनी चूची और गांड दबवा रही थी और भाभी को आगे देख रही थी. मैने देखा कि दो आदमी भाभी को दो तरफ़ से घेरे थे और भाभी उनसे अपनी दोनो चूचियां मसलवा रही

थी. हम इस तरह मज़े ले ले कर अलग अलग दुकानों मे घूमने लगे.

अचानक मैने देखा कि मामाजी भीड़ मे हमे ढूंढते ढूंढते भाभी के करीब पहुंच गये हैं और पीछे खड़े होकर उन दो आदमीयों को छेड़-छाड़ करते देख रहे हैं. मैं जल्दी से जाकर भाभी को होशियार करना चाहती थी, पर जो आदमी मेरे चूची पर लगा हुआ था उसने मुझे हिलने ही नही दिया.

भाभी मज़े से एक दुकान के सामने खड़े हो कर उन दोनो आदमीयों से अपनी चूची मसलवाये जा रही थी. मामाजी को यह जल्दी समझ मे आ गया कि भाभी को छेड़-छाड़ मे मज़ा आ रहा है.

मैं डर गयी कि अब क्या होगा. पर मैने देखा कि थोड़ी देर भाभी को देखने के बाद मामाजी ने अपना हाथ बढ़ाकर भाभी की गांड को छू लिया. भाभी अपनी चूचियों को मसलवाने मे इतनी मश्गुल थी कि उनको ध्यान नही आया कि उनके ससुर पीछे खड़े हैं. जब भाभी ने कोई प्रतिक्रिया नही की, तो मामाजी ने अपनी बहु की गांड को जोर से दबाना शुरू किया. अनजाने मे भाभी खड़े खड़े ससुर से गांड दबवाने का मज़ा लेने लगी. साथ मे उन दो आदमीयों के खड़े लण्डों को पैंट के उपर से दबाने लगी.

अब मुझे मामला समझ मे आने लगा. मामाजी को समझ मे आ गया था कि उनकी बहु बदचलन है, और वह भी उसकी जवानी का मज़ा लेना चाहते थे.

मैं भीड़ मे धीरे धीरे सरकते हुए भाभी के पास पहुंची और उसे पुकारा. भाभी पीछे मुड़ी तो उसने अपने ससुर को पीछे खड़ा पाया. उसके तो चेहरे के रंग उड़ गये. मामाजी ने भी झट से अपना हाथ हटा लिया.

मैने मामला संभालते हुए कहा, "उफ़्फ़ कितनी भीड़ है ना, भाभी! थोड़ा हिलना भी मुश्किल है!"
मामाजी बोले, "हाँ बिटिया! मैं तो कहता हूँ हम घर चलते हैं. काफ़ी घूम लिये भीड़ मे."

मैं और भाभी उदास हो गये क्योंकि हमको भीड़ मे जवानी का मज़ा मिल रहा था.

रास्ते भर तांगे मे बैठे मामाजी कनखियों से भाभी की थिरकती हुई चूचियों को देखते रहे.

घर पहुंचकर मामाजी बोले, "मीना बहु, थोड़ा चाय-नाश्ता बना दे! बहुत भूख लगी है." मैने मन मे सोचा, "मामाजी, आपको तो अब भाभी की जवानी की भूख है! नाश्ते से क्या होगा?"

© Bicks and Trishna 2017

मैं भाभी के पीछे किचन मे गयी. भाभी ने चुल्हे पर चाय का पानी चढ़ा दिया. वह बहुत गुस्से मे लग रही थी.

मैने पूछा, "भाभी, इतनी गुस्से मे क्यों हो?"
भाभी- "बाबूजी की वजह से सारा मज़ा किरकिरा हो गया और तुम बोलती हो गुस्से मे क्यों हूँ!"
मैने भोली बनते हुए पूछा, "कौन सा मज़ा, भाभी?"
भाभी - "बहुत भोली बनती हो मेरी रांड ननद रानी! जैसे खुद मेले मे चूची, चूत, और गांड टिपवा के मज़ा नही ले रही थी! और थोड़ा वक्त मिलता तो वह दोनो आदमी मुझे मेले के बाहर कहीं सुनसान मे ले जाकर पटक के चोदते. पता है, कल की चुदाई के बाद से मैं लौड़ा लेने के लिये मरी जा रही हूँ!"
मैं- "भाभी, मेरी भी यही हालत है! पर कोई बात नही. फिर कभी मौका मिल जायेगा."
भाभी - "अब कहाँ मौका मिलेगा, वीणा! सासुमाँ के लौटते ही बाबूजी हमको हाज़ीपुर वापस ले जायेंगे. वहाँ सब की निग्रानी मे कहाँ इतना जवानी का मज़ा मिलेगा!"

मैने मन मे सोचा, "तू तो साली लण्ड ढूँढ ही लेगी. एक तो तेरा पति है तेरी प्यास बुझाने के लिये. ऊपर से तेरी सास कल चुदवा के रांड बन गयी है. दूजे तेरा ससुर भी तेरी जवानी पे आशिक हो गया है. तेरा तो पेट भी ठहर गया तो किसी को कुछ पता नही चलेगा. पर मेरा क्या होगा? घर जाने के बाद तो मैं लण्ड के लिये तरस जाऊंगी!"

भाभी ने चाय बनाकर कप मे डाली तो मैने कहा, "भाभी तुम मामाजी को चाय देकर आओ. मैं कुछ जुगत लगाती हूँ."

भाभी मामाजी को चाय देने गयी तो मैं किवाड़ पर खड़े होकर दोनो को देखने लगी. भाभी का थोड़ा घूंघट था, पर जब चाय देने के लिये झुकी तो ब्लाऊज़ के ऊपर से उसके चूचियों की झलक मामाजी को दिख गयी. मामाजी अपनी बहु की मस्त चूचियों को आँखें गाड़े घूरते रहे जब तक कि ना भाभी ने आंचल से अपनी चूचियों को ढक लिया.

भाभी किचन मे वापस आई तो मैने कहा, "क्यों भाभी, कुछ आया समझ मे?"
भाभी का चेहरा शरम से लाल हो रहा था और वह मंद मंद मुसकुरा रही थी. बिना जवाब दिये वह कढ़ाई मे मामाजी के लिये पकोड़े तलने लगी.

मैने कहा, "भाभी, तुम्हारा काम तो समझो बन गया."
भाभी- "क्या मतलब?"
मैं- "मतलब ससुराल मे तुम्हारी चुदाई की व्यवस्था हो गयी."
भाभी- "वह व्यवस्था तो मेरी पहले से ही है. मेरा आदमी है न वहाँ."
मैं- "अरे वह चुदाई भी कोई चुदाई है! सोनपुर की सामुहिक रगड़ाई के बाद अपने पति की चुदाई तुमको बिलकुल फिकी लगेगी, भाभी!"
भाभी- "यह तो तुम ठीक कह रही हो, वीणा. चुदाई का जितना मज़ा यहाँ आकर मिला, घर पर नही मिल सकता. पर मैं करूं तो क्या करूं?"
मैं- "भाभी, यह बताओ, बलराम भईया (भाभी के पतिदेव) घर पर कितने रहते हैं?"
भाभी- "वह तो सारा दिन खेत मे काम पर ही रहते हैं. रात को ही घर आते हैं."
मैं- "बस और क्या चाहिये? रात को तुम भईया का लण्ड लेना. और दिन मे जो लण्ड घर पर मिल जाये वह ले लेना!"
भाभी- "ननद रानीजी, यह भी तो बताओ घर पर और कौन सा लण्ड है?"
मैं- "क्यों, तुम्हारे देवर किशन का नही है क्या?"
भाभी- "वह तो बच्चा है, यार! अभी 18 का ही हुआ है."
मैं- "तो चुदाई सिखा दो ना उसको! और मामाजी का लण्ड भी तो है ना!"

भाभी ने मुझे बनावटी गुस्से से देखा और कहा, "चुप कर मुँहफट! कुछ भी बोल देती हो. वह मेरे ससुर हैं!"
मैं- "तो यह बताओ भाभी, जब तुम चाय देने गयी थी, ससुरजी अपनी प्यारी बहु की गोल-गोल जवान चूचियां क्यों आँखों से भोग रहे थे?"

भाभी कुछ न बोली. थोड़ा मुसकुराते हुये पकोड़े तलने लगी.

मैने कहा, "और यह भी बताओ भाभी, जब तुम आज मेले मे उन दो आदमीयों से अपनी चूचियां मिसवा रही थी, तब तुम्हारी गांड कौन दबा रहा था?"
भाभी- "कौन?"
मैं- "मामाजी."
भाभी- "झूठ बोल रही हो तुम!"
मैं- "मेरा यकीन ना मानो तो अपने ससुर को थोड़ा मौका दे कर देखो. सब समझ मे आ जायेगा. मामाजी तुम्हारी जवानी को पीने के लिये बेचैन हैं."
"चुप झूठी!" बोल कर भाभी प्लेट मे पकोड़े लेकर मामाजी को देने गयी. मैं पीछे पीछे दरवाज़े तक

गयी.

भाभी ने पकोड़ों की प्लेट टेबल पर रखी तो मामाजी बोले, "बहु, बहुत थक गयी है क्या, काम कर कर के?"
भाभी बोली "नही, बाबूजी."
मामाजी भाभी का हाथ पकड़ कर बोले, "अरे बैठ ना इधर, बहु! कितना काम करती है! थोड़ा आराम भी कर लिया कर."

मामाजी ने भाभी को खींच कर खुद से बिलकुल सटाकर सोफ़े पर बिठाया और बोले, "ले मेरे साथ थोड़े पकोड़े तू भी खा."

भाभी ने एक पकोड़ा उठाया और खाने लगी. मामाजी से सटकर बैठने के कारण उसे बहुत शरम आ रही थी.

"कितनी गरमी है ना, बहु?" मामाजी अपने शरीर को भाभी के जवान शरीर से चिपकाकर मज़ा लेते हुये बोले. "तू हमेशा घूंघट क्यो किये रहती है?"
भाभी- "मुझे शरम आती है, बाबूजी. आप बड़े हैं ना!"
मामाजी- "अरे मुझसे कैसी शरम! मै तो तेरे अपनों जैसा हूँ. घूंघट करना है तो अपनी सासुमाँ के सामने करना. चल घूंघट उतार कर थोड़ा आराम से बैठ. बहुत गरमी हो रही है."

भाभी ने थोड़ी ना-नुकुर की फिर घूंघट सर से गिरा दिया. भाभी के ब्लाऊज़ के ऊपर से उसकी मस्त कसी-कसी चूचियां दिखाई दे रही थी. अब मामाजी आराम से बहु की चूचियों का नज़ारा करते हुये पकोड़े खाने लगे. फिर उन्होने अपने एक हाथ से भाभी की कमर को घेर लिया और उनके पेट को हल्के से सहलाते हुए कहा, "कितनी अच्छी है मेरी बहु! मेरा बेटा कितना किस्मत वाला है कि उसको इतनी जवान, सुन्दर बीवी मिली है."

भाभी को ना चाहते हुए भी अपने ससुर से सट कर बैठे रहना पड़ा.

मामाजी ने एक पकोड़ा भाभी के मुँह मे डाला और कहा, "मेरा बेटा तेरी सारी ज़रूरतों का खयाल रखता है के नही?"
भाभी- "जी बाबूजी, रखतें हैं वह."
मामाजी- "अगर नही रखता है तो मुझे बताना. मैं बलराम को समझा दूँगा. जब औरत की ज़रूरतें

अपने पति से पूरी नही होती है तो वह इधर उधर मुँह मारती है."

मामाजी की बात सुनकर भाभी शर्म (और डर) से लाल हो गयी. आखिर पिछले 2-3 दिनो से वह भी भरपूर मुँह मार रही थी - यानी सब से चुदवा कर अपनी प्यास बुझा रही थी.
मामाजी- "अरे शरमा मत बहु! यह तो दुनिया की सच्चाई है. अगर औरत का पति उसको पूरा मज़ा नही देता है तो वह किसी और से मज़ा लेने लगती है. और यह गलत भी तो नही है!"
भाभी- "जी, बाबूजी."
मामाजी- "पर यह सब समाज से छुपा कर करनी चाहिये, नही तो बड़ी बदनामी होगी. तू समझ रही है न मै क्या कह रहा हूँ?"

भाभी अब समझ गयी कि उनके ससुर का इशारा किस तरफ़ है. उठते हुए बोली, "बाबूजी, मैने रसोई मे पानी चढ़ा रखा है. आती हूँ थोड़ी देर मे."

भाभी उठकर आयी तो मामाजी उसकी मटकते चूतड़ों को भूखी नज़रों से देखते रहे.

किचन मे आते ही मैने कहा, "भाभी, अब तो तुम मानती हो ना मै झूठ नही बोल रही थी? मामाजी तुम पर चढ़ने के लिये बेकरार हैं."
भाभी- "हाँ बाबा, मानती हूँ! पर मुझे उनसे क्या फ़ायदा? मुझे तो कोई जवान लण्ड चाहिये."
मैं- "तो मामाजी मे क्या बुराई है? उम्र से कुछ नही होता. देखा ना विश्वनाथजी का कितना बड़ा लौड़ा है और कितना मस्त चोदते हैं."
भाभी- "हूँ! सो तो है."
मैं- "और तुम्हे इससे फ़ायदा भी बहुत है. एक बार मामाजी को अपनी जवानी के जाल मे फांस लो, फिर तुम घर पर खुले आम अपने देवर से जवानी का मज़ा ले सकती हो."
भाभी- "पर मेरी सासुमाँ तो रहेंगी ना घर पर! वह मुझे यह सब नही करने देगी."
मैं- "भाभी, मामीजी किस मुँह से कुछ बोलेगी? कल तो वह रंडी की तरह चुदी है. और अगले 2 दिनो मे विश्वनाथजी उन्हे चोद चोद कर उनकी रही सही शरम भी दूर कर देंगे. बस तुम अपने ससुर से चुदवा लो, फिर तुम्हारे तो वारे-न्यारे हो जायेंगे!"
भाभी- "पर यह सब होगा कैसे, मेरी जान?"
मैं- "तुम बस वही करो जो मामाजी कहते हैं. मुझे पूर यकीन है कल सुबह से पहले तुम अपने ससुर से चुद चुकी होगी."

भाभी की आंखें हवस मे लाल हो रही थी. मैने कहा, "भाभी, मुझे मत भूल जाना! मामाजी से

चुदवा लो तो किसी बहाने मुझे भी उनसे चुदवा देना. मेरा भी मन बहुत लण्ड खाने को कर रहा है!"

उस रात को खाने के बाद मामाजी भाभी से बोले, "बहु, सोने से पहले मेरे कमरे मे एक गिलास दूध लेते आना." बोलकर मामाजी अपने कमरे मे चले गये.

भाभी दूध लेकर जब मामाजी के कमरे मे जाने लगी तो मैने कहा, "जाओ जाओ बहुरानी! आज तो ससुर के साथ बहुत रंगरेलियाँ मनेंगी!"
भाभी बोली, "तुम इतनी मत जलो! मेरा काम बनते ही तुमको अन्दर बुला लूंगी. फिर जितना चाहे अपने प्यारे मामाजी से चुदवा लेना."

भाभी मामाजी के कमरे के अन्दर गयी तो मैं किवाड़ के पास छिपकर अन्दर का नज़ारा देखने लगी.

भाभी ने घूंघट नही किया था. उसने एक छोटा सा टाईट ब्लाऊज़ पहना हुआ था. मामाजी की आँखें उसके नंगे पेट और गोलाईयों पर गढ़ी हुई थी. वह बोले, "आओ बहु. यहाँ रख दो दूध."

मामाजी ने एक लुंगी और एक बनियान पहन रखा था और बेड के सिरहाने का सहारा लेकर बैठे थे.

भाभी ने बेड के बगल के छोटे टेबल पर दूध रखा तो मामाजी ने उसका हाथ पकड़ कर अपने पास बिस्तर पर बिठा लिया. दूध पीकर मामाजी बोले, "बहु, बहुत पाँव दुख रहे हैं. ज़रा दबा दे तो."

भाभी जी मामाजी के पाँव के पास बैठकर उनके पैर दबाने लगी. वह झुक रही थी तो उसके गोल भरी भरी चूचियां हिल रही थी. मैं देखा कि भाभी की चूचियों को देखते देखते मामाजी का लौड़ा खड़ा हो गया और लुंगी मे से साफ़ दिखाई पड़ने लगा. भाभी की नज़रें भी बार बार वहाँ जा रही थी.

"बहु ज़रा ऊपर की तरफ़ भी दबा देना." मामाजी बोले.

भाभी मामाजी की जांघों को दबाने लगी तो मामाजी का लण्ड बिल्कुल तम्बू बनाकर लुंगी मे खड़ा

हो गया. देख के लग रहा था कुछ कम मोटा या लंबा नही था. देखकर भाभी के हाथ कांपने लगे.

मामाजी भाभी की झिझक देख कर बोले, "क्या हुआ बहु? तेरे हाथ क्यों कांप रहे हैं?"
भाभी बोली, "बाबूजी, वोह...."
"ओह अच्छा! इसे देख कर?" मामाजी अपने खड़े लण्ड की तरफ़ इशारा कर के बोले, "क्या करूं, तेरे कोमल हाथों के छूने से हो गया है. तू बुरा मत मान. तू तो बलराम का देखती रहती होगी."

भाभी ललचाई नज़रों से लुंगी मे छुपे मामाजी के खड़े लण्ड को देखती रही. कुछ बोली नही.

मामाजी बोले, "बहु, तू शरमा रही है क्या? इधर आ, पास आ के बैठ." मामाजी ने भाभी को खींच कर अपने बगल मे बिठाया और बोले, "कितना बड़ा है रे बलराम का?" भाभी चुप रही तो मामाजी बोले, "मेरा बेटा है, मुझ पर ही गया होगा."

भाभी की नज़र बार बार मामाजी के लौड़े पर जा रही थी. देखकर मामाजी बोले, "बहु, देखने का मन कर रहा है क्या?"

भाभी झेंप के लाल हो गयी और नही मे सर हिलाया.

मामाजी बोले, "अरे मन कर रहा है तो बोल ना! यहाँ हमे कौन देखने वाला है? जब से तू यहाँ आयी है तूने भी तो बलराम का नही लिया है. मन तो कर ही सकता है. रुक मैं दिखा देता हूँ."

बोलकर मामाजी ने अपनी लुंगी खींचकर उतार दी. अब वह बनियान के नीच पूरी तरह नंगे थे. उनका लण्ड काला और मोटा था लंबाई 8-9 इन्च की रही होगी. लण्ड खड़ा हो के फ़नफ़ना रहा था.

भाभी अपनी लाल, हवस से भरी आँखों से लण्ड को देखने लगी, पर बनावटी सदमा दिखाने के लिये मुँह पर अपना हाथ रख ली.

मामाजी मुसकुराये और एक हाथ से भाभी की एक चूची को दबाकर बोले, "बहु, यह बता, बलराम का बड़ा है या मेरा?"
चूची पर मामाजी का हाथ लगते ही भाभी मस्ती की आह भर कर बोली, "पता नही, बाबूजी."

मामाजी धीरे धीरे भाभी की चूची दबाते हुए बोले, "तो हाथ लगा कर देख ले ना, मेरा बड़ा है या बलराम का!"

भाभी बोली, "नही बाबूजी, मुझे शरम आ रही है."

मामाजी ने भाभी की चूची को जोर से भींचा और डाँट कर कहा, "चूतमरानी, बहुत शरम का नाटक कर लिया तूने. मेले मे तू दो दो आदमीयों से अपनी चूचियां दबवा रही थी और एक एक हाथ से पैंट के ऊपर से उन दोनो का लौड़ा सहला रही थी. तू क्या समझी मैने कुछ देखा नही?"

भाभी ने शर्म से सर झुका लिया और अपने दोनो हाथों मे अपना मुँह छुपा लिया.

मामाजी बोले, "मुझे आज मेले मे समझ आया कि मेरी भोली भाली बहु कितनी बड़ी छिनाल है. ज़रूर तू इससे पहले भी बाहर बहुत मुँह काला करवाई है. मै तुझे घर ले के नही आता तो वह दोनो तुझे किसी खेत ले जाकर किसी रंडी की तरह चोदते."

भाभी सर झुकाये बैठी रही तो मामाजी ने प्यार से उनके गालों को सहलाया और कहा, "बहु, तू बुरा मान गयी क्या? मैं तो तेरे भले के लिये कह रहा हूँ! पति के बिरह मे अक्सर जवान औरतों के पाँव फिसल जाते हैं और वह बाहर किसी से चुदवा लेती हैं. पकड़े जाने पर पुरे घर की बदनामी होती है. तुझे मै मज़े लेने से कब मना कर रहा हूँ? मै तो कह रहा हूँ जो करना है घर पर ही कर ताकि घर की बात घर मे ही रहे."

भाभी ने सर उठाया और कांपते हाथ से अपने ससुर का लण्ड पकड़ा. पकड़ते ही वह गनगना गयी. मामाजी भी सिहर उठे. भाभी धीरे धीरे मामाजी के गरम, मोटे लण्ड को हिलाने लगी. मामाजी भाभी की एक चूची को दबा दबा का मज़ा देने लगे.

कुछ देर बाद मामाजी बोले, "बहु, गरमी लग रही होगी तुझे. साड़ी उतार के आराम से बैठ. मैं भी तो तेरी जवानी को अच्छे से देखूं! मेरा बेटा तो रोज़ ही देखता है."

भाभी कुछ बोलने वाली थी, पर डाँट के डर से उठी और जल्दी से अपनी साड़ी उतार कर ज़मीन पर रख दी. फिर मामाजी की पास बैठ कर उनका लण्ड हिलाने लगी. मामाजी ने फिर भाभी की चूची दबानी शुरु की. फिर बोले, "बहु, ब्लाऊज़ के ऊपर से दबा का मज़ा नही आ रहा. ज़रा अपना ब्लाऊज़ उतार दे."

भाभी ने बिना कुछ कहे अपना ब्लाऊज़ भी उतार दिया. मामाजी ने भाभी के ब्रा को थोड़ा ऊपर खींचकर उनकी चूचियों को नंगा किया और मज़े से उन्हे दबाने लगे. भाभी को तो अब बहुत मज़ा आ रहा था. उन्होने खुद अपने हाथ पीछे ले जाकर अपने ब्रा का हुक खोल दिया और ब्रा उतार दी. अब भाभी कमर के ऊपर पूरी तरह नंगी थी.

मामाजी बोले, "यह अच्छा किया तूने बहु. अब मै अच्छी तरह तुझे मज़ा दे पाऊंगा. सुन, मन करे तो तू मेरा लण्ड चूस सकती है. बलराम तुझे अपना लण्ड चुसाता है कि नही?"

भाभी बोली, "जी बाबूजी, चुसाते हैं." बोलकर भाभी मामाजी के लण्ड पर झुक गयी और अपने नरम होठों मे भरकर चूसने लगी. मामाजी भी भाभी की गोल, नरम चूचियों को प्यार से दबाने और मसलने लगे जिससे भाभी मस्ती मे कराहने लगी.

मामाजी ने अपनी बनियान उतार दी और पूरे नंगे हो गये. खेतों मे मेहनत किया हुआ कठोर शरीर था उनका. उन्होने फिर भाभी के पेटीकोट का नाड़ा खींच कर खोल दिया. भाभी खुद ही अपनी पेटीकोट उतार कर नंगी हो गयी और मज़े ले ले कर अपने ससुर का लण्ड चूसने लगी. मामाजी उसकी एक चूची को मसल रहे थे, और अपनी दूसरी चूची के निपल को वह खुद ही छेड़ रही थी.

यह सब नज़ारा देखते देखते मुझे भी बहुत जोश चढ़ गया था. मैने भी अपनी ब्लाऊज़ और ब्रा उतार दी और अपने नंगे कंवारे चूचियों को अपने हाथों से मसलने लगी. मैने अपनी साड़ी भी उतार दी और पेटीकोट को उठाकर एक हाथ से अपनी गर्म चुत मे उंगली करने लगी.

उधर मामाजी से और रहा नही गया. उन्होने भाभी को बिस्तर पर लिटाया और उसके दोनो पाँव फांक करके उस पर चढ़ गये. अपना काला, मोटा लण्ड भाभी की चुत पर रखा और एक जोरदार धक्का मार कर पूरा अंदर पेल दिया. भाभी मस्ती मे चिहुक उठी. "ओहह!! धीरे, बाबूजी! मै कहीं भागी जा रही हूँ क्या?"

"आया मज़ा, बहु?" मामाजी ने पूछा और कमर चलाकर भाभी को चोदने लगे. भाभी बोली,"जी बाबूजी, बहुत मज़ा आ रहा है." बोलकर उसने मामाजी को सीने से चिपका लिया और उनके होंठ पीने लगी.

इस तरह कुछ देर मामाजी अपनी बहु को जोरदार ठाप देते रहे और उसके होठों और चूचियों को

पीते रहे. भाभी का पारा बहुत ऊपर चढ़ चुका था. वह मस्ती की आवाज़ें निकालने लगी और कमर उठा उठा कर अपने ससुर के ठापों का जवाब देने लगी. "आहहह!! ऊहहह!! बाबूजी, कितना मज़ा आ रहा है! आहहह!! और जोर से पेलो मेरी चुत को, मेरे राजा!!" वह चिल्लाने लगी.

मामाजी ने अपनी पेलने की स्पीड बढ़ा दी और भाभी को दमदार ठाप देते हुए बोले, "छिनाल, तुझे यही चाहिये था ना? इसी के लिये तू मेले मे उन दो आदमीयों से चूची दबवा रही थी. उनका लौड़ा लेने के लिये पागल हो गयी थी. छिनाल, तेरे जैसी चुदैल की भूख कभी एक पति से नही बुझती. अब से तुझे हम बाप-बेटा इतना चोदेंगे कि बाहर के किसी की ज़रूरत महसूस नही होगी."

भाभी भी मस्ती की चरम सीमा पर पहुंच चुकी थी. अपना कमर उचका उचका कर मामाजी का लण्ड ले रही थी और बोल रही थी, "हाँ मेरे चोदू ससुरजी! एक लण्ड से मेरी भूख नही मिटती है! मैं दो दिन से बहुत से लण्ड ले रही हूँ! आहहह!! मुझे दिन रात लण्ड चाहिये, मेरे राजा!! और जोर से चोदो मुझे बाबूजी! और जोर से!! ओफ़्फ़्फ़!! कितना मज़ा आ रहा है!! चोद चोद कर अपनी बहु को रंडी बना दो, बाबूजी!! आहहह!! मै गयी, बाबूजी, मै गयी!!!"

बोलकर भाभी झड़ने लगी. मामाजी ने अपनी बहु को सीने से चिपका लिया और अपना लौड़ा भाभी की चुत मे पूरा ठूँसकर उसके गर्भ मे अपनी मलाई भरने लगे.

तूफ़ान शांत होने पर दोनो एक दुसरे से लिपट के लेटे रहे.

इधर मै भी जोर जोर से अपनी नंगी चूचियों को दबा रही थी और तीव्र गति से अपनी चुत मे उंगली कर रही थी. मै इतने जोर से झड़ी कि मेरी चीख निकल गयी.

मेरी चीख सुनकर मामाजी बोले, "बहु, दरवाज़े के बाहर कोई है क्या?"
भाभी मामाजी के नीचे लेटे अपनी चुत मे उनके लौड़े और उसके पानी का मज़ा लेती हुई बोली, "वीणा होगी, बाबूजी."
मामाजी उठकर बैठ गये और बोले, "वीणा! हाय यह क्या हो गया! उसने तो सब देख लिया होगा!"
भाभी बोली, "आप घबराइये नही, बाबूजी. वीणा भी बहुत खेल खाई हुई है. दो दिन से मेरे साथ वह भी खूब चूत मरा रही है."

भाभी झट से नंगी ही उठकर दरवाज़े के पास आयी और दरवाज़ा खोल कर मुझे पकड़ लिया. मुझे भागने का मौका ही नही मिला. मुझे खींचकर अंदर ले जाते हुए बोली, "ननद रानी, बाहर खड़े

ससुर-बहु की चुदाई देखकर क्यों तरस रही हो. अंदर आकर खेलो हमारे साथ!"

मेरे बदन पर सिर्फ़ मेरा पेटीकोट था. मामाजी बिस्तर पर नंगे लेटे मेरे कंवारे चूचियों को ललचाई आँखों से देख रहे थे. मुझे इस तरह अध-नंगा देख कर उनके सुस्त लण्ड मे फिर ताओ आने लगा. वह नंगे ही उठकर आये और मुझे पकड़ कर बिस्तर पर ले गये. इधर भाभी ने झट से मेरे पेटीकोट का नाड़ा खोल दिया और मेरा पेटीकोट ज़मीन पर गिर गया. मैं मामाजी के सामने मादरजात नंगी हो गयी.

मैं हाथों से अपनी चुत और चूचियों को छुपाती हुई बोली, "भाभी, छोड़ो मुझे!"

भाभी हंस कर बोली, "साली, छुपके मेरी चुदाई देख रही थी! अब तेरी चुदाई होगी ताकि तू किसी को कुछ बोल ना सके. ले, चूस बाबूजी का लण्ड. चूसकर खड़ा कर!" और मेरे सर को जबरदस्ती मामाजी के लण्ड पर झुका दिया.

मामाजी का लण्ड सुस्त होकर भी 6-7 इंच लंबा और काफ़ी मोटा था. मैने उलटी आने का नाटक किया. भाभी ने जबरदस्ती मामाजी का ढीला लण्ड पकड़ कर मेरे मुँह मे ठूँस दिया और बोली, "ननद रानी, इतना नाटक किसको दिखाने के लिये कर रही हो? मेरे सामने तुमने जंगल मे मज़े लेकर रमेश, सुरेश, दिनेश, और महेश का लण्ड चूसा था. कल रात तो तुमने विश्वनाथजी का भी लौड़ा चूसा था और मज़े ले लेकर उनकी मलाई खाई थी! अब चूसो अपने मामाजी का लण्ड!"

मैं मामाजी का ढीला लण्ड चूसने लगी. जवानी की मस्ती तो मुझे चढ़ ही चुकी थी और लौड़े की मादक खुशबू मेरे नाक मे जाकर मुझे और मस्त बनाने लगी. पर मैं मामाजी के सामने रंडी की तरह पेश नही आना चाहती थी.

मामाजी चौंक कर बोले, "वीणा, तुमने कल उन चारों का लण्ड चूसा था?"
भाभी हंसकर बोली, "अब आपसे क्या छुपाना बाबूजी! जिस दिन हम दोनो मेले मे खो गये थे, उस दिन रमेश, सुरेश, दिनेश, और महेश ने जंगल मे ले जाकर हम दोनो का सामुहिक बलात्कार किया था. कल तो देर रात तक वह चारों और विश्वनाथजी मेरी और वीणा की चुदाई करते रहे. आप तो नशे मे टुन्न हो गये थे इसलिये आप को कुछ पता नही चला."

मामाजी की हैरानी बढ़ती ही जा रही थी. "बहु, यह तू क्या कह रही है? तुम दोनो तो बहुत बड़ी छिनालें हो!"

मैने चिढ़कर कहा, "भाभी, यह क्यों नही बताती कि रमेश और उसके 3 दोस्तों ने कल मामीजी को भी चोदा था?"

मामाजी बोले, "क्या!! कौशल्या (मेरी मामी) भी शामिल थी इस सब में?"

भाभी बोली, "बाबूजी, आपको क्या लगता है, सासुमाँ विश्वनाथजी के साथ अपने पीहर क्यों गयी है? रास्ते भर उनसे चोदवाने के इरादे से."

सुनकर मामाजी को बहुत गुस्सा आ गया. वैसे मेरे चुसाई से उनका लौड़ा फिर खड़ा हो गया था. वह बोले, "हे भगवान!! एक से एक रंडीयाँ बसी है मेरे घर मे! और विश्वनाथ मेरा दोस्त होकर मेरे साथ ऐस कैसे कर सकता है!"

भाभी ने मामाजी के दोनो तरफ़ अपने पाँव रख दिये और उनके मुँह मे एक चूची घुसाकर बोली, "बाबूजी, आप गुस्सा क्यों होते हैं? जैसे आपको मौका मिला तो आपने अपनी बहु को चोद लिया. वैसे ही मौका मिलने पर विश्वनाथजी और उन चारों बदमाशों ने वीणा, सासुमाँ और मुझे चोद लिया. मौका मिला है इसलिये सासुमाँ भी विश्वनाथजी से चुदवा रही होगी."

सुनकर मामाजी का गुस्सा ठंडा हो गया और वह भाभी की नंगी चूचियों को दबाने और चूसने लगे. दो दो नंगी औरतों के आक्रमण के आगे उनका गुस्सा टिक नही सका.

मैने कहा, "मामाजी, यह सोचिये कि कितना अच्छा हुआ. अब मामी भी चुद गयी है, इसलिये घर जाकर आप भाभी को खुले आम चोदेंगे तो भी वह कुछ नही बोलेंगी."

मामाजी को अब हमारी बात समझ आयी. मुझे बोले, "वीणा, बहुत शैतान हो गयी है तू इन दो दिनो मे! चल लेट बिस्तर पर! अब तेरी चुदाई करता हूँ!"

मैं खुशी खुशी बिस्तर पर चूत खोलकर लेट गयी. भाभी मामाजी के ऊपर से उतरी और मेरे पास बैठ गयी. मामाजी उठे और मेरी फ़ांक की हुई टांगों के बीच बैठकर, मेरे चूत पर अपने लण्ड का मोटा सुपाड़ा रखा. फिर अचानक एक जोरदार धक्के से अपना आधा लण्ड मेरी चूत मे घुसा दिया.

मैं दर्द से बिलबिला उठी. "ऊइईई!! मर गयी मै!! मामाजी आराम से नही डाल सकते थे अपना

मूसल जैसा लण्ड!! उफ़्फ़्फ़ माँ!! फाड़ के रख दिया मेरी चूत को!!"

मामाजी रुक गये और बोले, "बहु, तू तो कहती थी यह दो दिन से चुद रही है लोगों से?"

मैं बोली, "मामाजी, दो ही दिन से चुद रही हूँ. भाभी की तरह चुद चुद कर चूत का भोसड़ा नही बना लिया है! हाय कितना दर्द हो रहा है!!"

भाभी हंसी और मेरे नंगी चूचियों को मसलते हुए बोली, "अभी दर्द चला जायेगा, ननद रानी! और एक दो दिन इसी तरह चुदाती रहोगी तो तुम्हारी चूत भी मेरी तरह भोसड़ी बन जायेगी." फिर वह मेरे होंठ पीने लगी.

भाभी के चूची मसलने और होंठ पीने से जल्दी ही मेरा दर्द कम हो गया. मामाजी ने भी धीरे से धक्के लगा लगा कर अपना पूरा लण्ड मेरी चूत मे ठूंस दिया. मैं भी मज़े मे कमर उठाने लगी.

भाभी बोली, "बाबूजी, अब यह तैयार हो गयी है. अब जी भर के चोदिये इस साली रांड को."
मैं भी मस्ती मे बोली, "हाँ मामाजी, चोदिये मुझे! जोर जोर से चोदिये!"

मामाजी ने कमर उठा उठा कर मुझे पेलना शुरु कर दिया. मेरी कसी चूत मे उनका मोटा लण्ड अंदर बाहर होने लगा और मुझे स्वर्ग का आनंद आने लगा. "आहहह!! ओहहह! क्या चोद रहे हो मामाजी!!" मैं ठाप खाते खाते बड़बड़ाने लगी. "पेलो मुझे अच्छे से, मेरे प्यारे मामाजी! आहहह!! पेल पेल के ढीली कर दो मेरी चूत!! हाय क्या मज़ा आ रहा है!!"

मामाजी को भी मेरी कसी चूत पेलने मे बहुत मज़ा आ रहा था. करीब 15 मिनट चोदने के बाद, मामाजी बहुत जोरों से ठाप लगाने लगे. उनका भारी पेलड़ मेरी गांड पर आ आकर टकराने लगा. उनके ठापों से हमारे पसीने से भीगे शरीर से पचाक-पचाक की आवाज़ आने लगी. इधर भाभी ने मेरे सर के दोनो तरफ़ अपने पाँव रख कर अपनी चूत मेरे मुँह पर दबा रखी थी जिसे मैं मामाजी के ठापों की ताल पर चाट रही थी. पूरा घर चुदाई की मस्त आवाज़ों से गूंज रहा था.

मामाजी की तेज ठुकाई से मेरा पानी छूटने लगा. मस्ती के सातवें आसमान पर मै चिल्लाने लगी, "ओहहह!! मामाजी, और जोर से पेलो!! हाय मेरे प्यारे मामाजी!! फाड़ के भोसड़ी बना दो अपनी भांजी की चूत को! आहहह!! क्या मज़ा आ रहा है!! उम्म माँ!! मै तो चुद कर रांड बन गयी रे!! आहहह! आहहह! मै गयी, मामाजी!! आहहह!!"

मेरे मुँह पर अपनी चूत रगड़ते रगड़ते भाभी भी खलास हो गयी, और उधर मेरे गर्भ की गहराई मे मुझे मामाजी के पेलड़ की मलाई गिरती मेहसूस हुई.

उस रात मामाजी ने भाभी और मुझे एक बार और चोदा. फिर हम तीनो थक कर नंगे ही सो गये.

अगले पूरे दिन मामाजी भाभी और मुझे भोगते रहे. कभी वह हमारी चूची दबा देते, कभी गांड दबा देते. भाभी भी अपने ससुर से पूरी तरह खुल गयी थी. अपने अध-नंगे चूचियों का नज़ारा करा करा कर मामाजी को पागल बनाती रही. भाभी और मैने मामाजी को रमेश, सुरेश, दिनेश, महेश, और विश्वनाथजी के हाथों अपने बलात्कार और सामुहिक चुदाई की कहानी खोल कर सुनाई. उसके बाद उस रात भी मामाजी, भाभी, और मैं देर रात तक चोदा-चोदी करते रहे.

© Bicks and Trishna 2017

मेले के रंग सास, बहु, और ननद के संग - 5

लेखिका: तृष्णा

अगले दिन सुबह सुबह मामी विश्वनाथजी के साथ वापस आ गयीं. वह बहुत खुश लग रही थी. मैं और भाभी समझ गये कि दो दिनो से विश्वनाथजी से खूब चुद कर आयी है.

मामीजी नहाने गयी तो विश्वनाथजी भाभी को खींच कर अपने कमरे मे ले गये. उसे बिस्तर पर लिटा कर उसकी साड़ी कमर तक उठा दी और अपना विशाल खूंटे जैसा लण्ड उसकी की चूत मे पेल दिया. जोश मे वह भाभी को जोरों का ठाप लगाने लगे.

भाभी मज़ा लेते हुए बोली, "विश्वनाथजी, क्या बात है इतने जोश मे हैं? मेरी सासुमाँ के साथ रास्ते मे कुछ किये नही क्या?"
विश्वनाथजी- "अरे किया ना, मेरी जान! जाते समय ट्रेन के टायलेट मे उसे एक बार चोद लिया. अपने मैके मे तो वह कुछ देर ही रुकी थी. चुदवाने की उसे इतनी ललक थी कि कल की रात हम होटल मे ही रुके. पूरी रात उसको नंगा करके चोदता रहा. आते समय भी ट्रेन के टायलेट मे एक और बार चोद लिया. चलती ट्रेन मे वह बहुत मज़े ले लेकर चुदवाई!"
भाभी- "फिर भी इतनी ठरक चढ़ी हुई है आपको!"
विश्वनाथजी- "तेरे सामने तेरी सास क्या चीज़ है, मेरी जान! तुझे चोदने का मज़ा ही कुछ और है. अब तो तू अपने घर जाने वाली है. फिर कभी आये ना आये. इसलिये आखरी बार के लिये चोद लेता हूँ तुझे!"

मैं दरवाज़े के फ़ांक से अंदर का नज़ारा देख ही रही थी कि मामाजी पीछे से आ गये. मुझे हटाकर उन्होने अंदर झांका तो पाया कि उनके प्रिय मित्र उनकी बहु पर चढ़ कर उसे चोद रहे थे. देखते ही उनका लण्ड ठनक गया. मेरे गांड मे अपना खड़ा लण्ड घिसते हुए और मेरी चूचियों को दबाते हुए बोले, "मेरी बहु इतनी बड़ी छिनाल है मैने सोचा नही था!"

हम दोनो नज़ारा देख ही रहे थे कि मामीजी नहा कर निकली और भाभी को आवाज़ लगायी, "बहु! कहाँ है तू? सूटकेस से मेरे कपड़े निकाल दे बेटी!"

पर भाभी तो विश्वनाथजी की ठुकाई मे मशगुल थी!

© Bicks and Trishna 2017

मामाजी बोले, "वीणा, जा देख तो तेरी मामी क्या कह रही है."

मैं भाग कर मामीजी के पास ऊपर गयी. "भाभी ज़रा बाहर गयी है, मामीजी. मैं आपके कपड़े निकाल देती हूँ." मैने कहा और मामीजी के सूटकेस से उनके लिये ब्लाऊज़, साड़ी वगैरह निकाल के दी.

मामीजी कपड़े पहनते हुए बोली, "क्यों वीणा, मेरे पीछे तुम लोग बहुत मज़ा किये क्या?"
मैं उनका इशारा नही समझी, पर बोली, "हाँ मामी, बहुत मज़ा किये. आप भी बहुत मज़ा की होंगी विश्वनाथजी के साथ मैके जाकर!"
मामीजी मुझे डाँटकर बोली, "बेशरम, कुछ भी बोल देती है!"
मैने कहा, "विश्वनाथजी ने आपका बहुत खयाल रखा होगा रास्ते मे? वही बता रहे थे."
मामीजी ने थोड़ा सतर्क होकर पूछा, "क्या क्या बताया विश्वनाथजी ने?"
मैं बोली, "यही कि दो दिनो से कैसे कैसे उन्होने आपका खयाल रखा. आपको अच्छे होटल मे ठहराया. आप तो ट्रेन के टायलेट मे भी जाती थी तो..."

मामीजी अपनी आवाज़ नीची कर के बोली, "हाय राम! विश्वनाथजी ने यह सब भी बता दिया! मैं तो शरम से मर जाऊंगी!"
मैं बोली, "मुझसे मत शरमाइये मामीजी! मुझे तो सब कुछ पता है. उस रात रमेश और उसके 3 दोस्तों ने आपके साथ जो जो किया था मैने सब देखा था."

मामीजी ने हाथों मे अपना चेहरा छुपा लिया. उन्होने सिर्फ़ पेटीकोट और ब्रा पहना हुआ था. मैने हाथ बढ़ा कर उनके पहाड़ जैसे चूचियों को धीरे से दबाया तो उन्होने कहा, "अब मैं तुम्हे और बहु को क्या मुँह दिखाऊंगी! बलराम के पिताजी को पता चला तो वह तो मुझे तलाक़ ही दे देंगे!"

मैने प्यार से मामीजी की चूचियों को थोड़ा और दबाया तो उन्होने अनचाहे भी एक सितकारी भरी.

मैने कहा, "मामीजी, आप मुझे और भाभी को मुँह दिखाने की फ़िक्र मत कीजिये. हम दोनो भी कोई दूध की धुली नही हैं. उस रात रमेश और उसके 3 दोस्त, और विश्वनाथजी ने रात भर भाभी और मेरी भी इज़्ज़त लूटी थी."
मामी- "हाय राम! यह तू क्या कह रही है, वीणा? मुझे विश्वास नही हो रहा तेरी बातों पर!"
मैं- "पर यह सच है, मामीजी! और जहाँ तक रही मामाजी की बात, पिछले दो दिनो से वह मुझे और भाभी को एक ही बिस्तर मे भोग रहे हैं."

© Bicks and Trishna 2017

मामीजी- "क्या अनाप-शनाप बक रही है, वीणा? तेरा दिमाग तो नही खराब हो गया?"

मैने मामीजी की चूची को और थोड़ा दबाया तो वह फिर मस्ती की आह भर उठी. मै समझ गयी कि यह सब सुनकर उनको जोश आने लगा है. मैने कहा, "मामीजी, आप मैके जाने के रास्ते विश्वनाथजी के साथ मुँह काला कर रहीं थी, तो कोई बात नही थी. भाभी और मैने मामाजी के साथ मुँह काला किया तो बुरी बात हो गयी! यह कैसी बात हुई?"

मामीजी हंसकर बोली, "नही रे, मुझे बस विश्वास नही हो रहा कि मेरे पीछे जवानी का ऐसा गंदा खेल तुम लोग खेल रहे थे."
मैने कहा, "मामीजी, अगर आपको मेरी बात पर विश्वास नही हो रहा तो अपने आँखों से देख लीजिये. अभी नीचे चलकर."

मामीजी ने कुछ नही कहा, पर मेरे पीछे पीछे पेटीकोट और ब्रा मे ही नीचे चली आयी.

विश्वनाथजी के कमरे के बाहर मामाजी नही दिखे. कमरे से मस्ती की हल्की आवाज़ें ज़रूर आ रही थी. "आहहह!! और जोर से!! उम्म!! क्या स्वाद है!! आहहह!! और पेलो मेरे राजा!!"

मर्दों की भी आवाज़ आ रही थी. "ले साली छिनाल! ले मेरा लौड़ा अपनी भोसड़ी मे! चूस कुतिया, चूस अच्छे से!"

मामीजी दरवाज़े के पास गयी और फ़ांक से अंदर देखी. वह चौंक के पीछे आ गयी. मैने पूछा, "क्या हुआ, मामी?". मामीजी बोली, "हाय राम! तेरे मामाजी और विश्वनाथजी एक साथ मीना बहु को ठोक रहे हैं!"

मैने अंदर देखा तो पाया कि भाभी अब भी साड़ी कमर तक उठा कर बिस्तर पर पड़ी थी, पर उसके ब्लाऊज़ और ब्रा उतार दिये गये थे. विश्वनाथजी उनके गोल गोल चूचियों को मलते हुए उसे चोदे जा रहे थे. मामाजी ने अपनी पैंट उतार दी थी और भाभी विश्वनाथजी की चुदाई खाते हुए मामाजी का लण्ड मज़े से चूस रही थी.

"यह तो बहुत अच्छा हुआ." मैने कहा.
"मतलब?" मामीजी ने हैरान होकर पूछा
"अब आप भी खुल कर विश्वनाथजी से जवानी का मज़ा ले सकती हैं. मामाजी कुछ नही बोल

पायेंगे." मैने कहा
"वो कैसे?"
"मामीजी, आप भी कितनी भोली हैं!" मैने कहा, "अभी अंदर जाकर मामाजी को रंगे हाथों पकड़ लीजिये. फिर ज़िंदगी भर जिससे चाहे अपनी चूत मरवानी हो मरवाते रहना, वह चूँ तक नही करेंगे!"
"चुप, फूहड़ कहीं की!" मामीजी बोली, "वैसे बात तो तू ठीक कह रही है, वीणा. पर मुझे अंदर जाते डर लग रहा है."
"डरने की क्या बात है, मामी!" मैने कहा और उनको अचानक दरवाज़े पर धकेल दिया. दरवाज़ा अंदर से बंद नही था. तुरंत खुल गया और हम दोनो अंदर जा गिरे.

हमें देखकर मामाजी ने हड़बड़ा के अपना लण्ड भाभी के मुँह से निकाल लिया.

मामीजी को देखकर तो भाभी शर्म से पानी पानी हो गयी. उसने चीखकर अपना चेहरा अपने हाथों से ढक लिया और विश्वनाथजी से छूटने की कोशिश करने लगी. पर विश्वनाथजी ने भाभी को चोदना बंद नही किया. उसके दोनो पाँव कस के पकड़कर अपना मूसल जैसा लण्ड उसकी चूत मे पेलते हुए बोले, "आइये, भाभीजी! बस आपकी ही कमी थी. देखिये आपकी चुदैल बहु कैसे दो दो लौड़ों से चुदवा रही है."

मामी गुस्से का नाटक कर के मामाजी को बोली, "हाय राम! आप यह क्या कर रहे हैं अपनी बहु के साथ! आपको शरम नही आती?"

मामाजी डरने की बजाय जोर से हंसे और बोले, "कौशल्या, शरम तो तुम्हे आनी चाहिये, जो उस रात शराब पीकर रामेश और उसके 3 दोस्तों से चुदवाई थी. और मैके जाने के बहाने होटल मे और ट्रेन के टायलेट मे विश्वनाथ से चुदवा कर अपने जिस्म की भूख मिटा कर आ रही हो."

मामीजी ने गुस्से से विश्वनाथजी की तरफ़ देखा तो उन्होने कहा, "अरे भाभीजी! हमाम मे हम सब नंगे हैं. यहाँ कौन है जो किसी और पे उंगली उठाने की हालत मे है? इसलिये मैने हमारे कुकर्म की सारी कथा भाईसाहब को बता दी है. अब गुस्सा छोड़िये और आप भी हमारे खेल मे शामिल हो जाईये. वैसे ब्रा और पेटीकोट मे बहुत सुंदर लग रही हैं आप. लगता है चुदाने के इरादे से ही यहाँ आयी हैं!"

मामाजी ने मामीजी का हाथ पकड़ा और अपने बाहों मे खींचकर कहा, "कौशल्या, अब गुस्सा थूक

भी दो! आओ, तुम भी कपड़े उतार कर हमारे साथ मज़ा लो. देखो बहु बेचारी कैसे शर्म से मरी जा रही है."

भाभी अब भी अपना चेहरा छुपाये विश्वनाथजी के जोरदार ठाप खाये जा रही थी.

मैने पीछे से मामीजी की ब्रा का हूक खोल दिया और उनकी विशाल चूचियाँ आज़ाद हो गयी. मामाजी ने उनके पेटीकोट का नाड़ा खोल दिया और उनको पूरा नंगा कर दिया. मैने पीछे से पकड़ कर उनकी चूचियों को मसलना शुरु कर दिया और उनके मोटे मोटे निप्पलों को छेड़ने लगी. मामीजी को जल्दी ही बहुत मस्ती चढ़ गयी.

मामाजी ने जैसे ही मामी को भाभी के बगल मे लिटाया, उन्होने अपने पाँव खोल दिये और अपनी मोटी बुर को सहलाते हुए बोली, "हाय विश्वनाथजी! आईये मेरी चूत को थोड़ा और मारिये. होटल और ट्रेन मे आपसे चुदवाकर मेरा मन नही भरा है."

विश्वनाथजी हंसे और बोले, "यह हुई ना बात! सास और बहु एक साथ एक ही बिस्तर मे चुदवा रहीं हैं!" बोलकर उन्होने अपना विशाल लण्ड भाभी की चूत से निकाला और मामीजी पर चढ़कर उनकी मोटी बुर मे एक धक्के मे पेल दिया. मामीजी ने विश्वनाथजी को अपनी बाहों मे जकड़ लिया और कमर उठा उठा कर उनसे चुदने लगी.

इधर अपने बगल मे नंगी सास को चुदवाते देखकर भाभी की शरम भी छूट गयी. वह चिल्लाकर बोली, "हाय, मेरा क्या होगा? मेरा पानी तो अभी निकला नही है! कोई मुझे भी तो चोदो!!"
मामी विश्वनाथजी का ठाप खाते खाते अपने पति को बोली, "सुनो जी! ज़रा अपनी बहु को चोद दो. बेचारी का पानी झड़ने ही वाला है!"

मामाजी यह सुनते ही भाभी पर चढ़ गये और उसे जोर जोर से चोदने लगे.

पूरे कमरे मे मस्ती का महौल हो गया. उधर मामीजी विश्वनाथजी से चुद रही थी और कह रही थी, "हाय मेरे राजा! जोर जोर से पेलो मुझे!! हाय दो दिन से होटल और ट्रेन मे कितना चोदे हो! मैके जा कर मुझे इतना मज़ा कभी नही मिला! आहहह!! चोद डालो मुझे! उफ़्फ़्फ़!! क्या मस्त मूसल है तुम्हारा!! साली यह रांड बहु अकेली क्यों खायेगी तुम्हारा यह मूसल! ओफ़्फ़्फ़!! और जोर से दो अपना लौड़ा!!"

इधर भाभी तो मस्ती के शिखर तक पहुच गयी थी. अपने सास के सामने कमर उठा उठा कर अपने ससुर का लण्ड ले रही थी और बड़बड़ा रही थी, "बाबूजी! आहहह!! मैं खलास हो रही हूँ!! चोदो जोर जोर से, मेरे प्यारे बाबूजी!! दिखा दो सासुमाँ को कि बहु की चूत कैसे मारी जाती है!! और जोर से, हाय और जोर से पेलो मुझे!! आहहह!! ओहहह!! मैं झड़ी! आहहह!!"

भाभी के झड़ते ही मामाजी उठे और अपना खड़ा लण्ड लिये मेरे पास आये. "वीणा, तुम क्या यहाँ फ़िल्म देखने आयी हो? उतारो अपने कपड़े!"

मुझे तो यह सब नज़ारा देख कर बहुत जोश चढ़ चुका था. मैने जल्दी से अपनी साड़ी उतार दी, पर पेटीकोट उतारने से पहले ही मामाजी ने मुझे बिस्तर पर भाभी के बगल मे लिटा दिया. मेरे पेटीकोट को खींच कर कमर तक चढ़ा कर उन्होने अपना लण्ड मेरी चूत पर रखा और अंदर ठांस दिया. मैं इतनी पनिया गयी थी कि लण्ड आराम से एक बार मे अंदर चला गया. मामाजी मुझ पर चढ़कर दना-दन मेरी चुदाई करने लगे.

भाभी जो अब थोड़ी तृप्त हो चुकी थी उठी और मेरे ब्लाऊज़ और ब्रा उतार दी. मैं अब ऊपर से नंगी थी और मेरे कमर पर बस मेरा पेटीकोट सिकुड़ा हुआ था. मामाजी का मोटा लण्ड मेरी चिकनी चूत के अंदर बाहर हो रहा था और उनके होंठ मेरे होठों और चूचियों को पिये जा रहे थे. मेरे बगल मे मामीजी भी पूरी तरह नंगे होकर विश्वनाथजी से चुदाये जा रही थी. सामुहिक चुदाई के इस माहौल मे मुझे अपूर्व मज़ा आने लगा.

कुछ देर की चुदाई के बाद मामीजी और मै झड़ने लगे. उधर मामी विश्वनाथजी को जकड़के चिल्लाने लगी, "हाय मेरे राजा! और जोर से चोदो अपनी रखैल को!! हाय अपनी रंडी को चोद चोद के मार डालो!! आहहह!!! मेरा पानी छूट रहा है, मेरे जान! और पेलो मुझे! जी करता है ज़िन्दगी भर तुमसे अपनी चूत मरवाती रहुं! हाय!! कभी ट्रेन मे, कभी खेत मे, बस मेरी चूत मारते रहो मेरे राजा!! आहहह!!!"

इधर मैं भी मामाजी को जकड़ कर झड़ने लगी और मस्ती मे अनाप-शनाप बकने लगी. मामाजी भी जोरों का ठाप देकर मेरे चूत मे झड़ने लगे.

जब सब लोग झड़ चुके तो हम सब हाँफ़ रहे थे. काफ़ी देर बाद हम लोगों की सांसें काबू मे आयी.

उसके बाद मामा, मामी, भाभी और मैं पूरी तरह से खुल गये. हम औरतें तो घर पर अध-नंगे ही रहने लगे. बस ब्रा और पेटीकोट या ब्लाऊज़ और पेटीकोट मे रहते थे ताकि मर्द लोग जब चाहे हमारे जिस्म से खेल सकें. मामाजी और विश्वनाथजी भी सिर्फ़ एक लुंगी मे रहते थे जिससे कि हम उनके नंगे बदन से और झूलते लौड़ों से खेल सकें.

अगले 4 दिनो तक हम पांचों ने जी भर कर सामुहिक सम्भोग किया. दिन हो या रात हम पांच नंगे होकर चोदा-चोदी मे डूबे रहते थे.

चौथे दिन शाम को मामाजी के घर से बलराम भईया का खत आया कि उनको बहुत जोर की मोच लग गयी है और वह चल नही पा रहे हैं. उन्होने हमें जल्द से जल्द लौटने को कहा. मामाजी ने जाकर अगले दिन की टिकट बना ली. हम सब उदास हो गये क्योंकि हमारे मौज-मस्ती के दिन पूरे होने वाले थे.

उस शाम को मामीजी के कहने पर विश्वनाथजी जाकर रामेश, सुरेश, दिनेश, और महेश को बुला लाये.

शाम से ही बोतल पे बोतल शराब चलने लगी. भाभी, मामीजी, और मैने बहुत शराब पी. जब सब को बहुत नशा हो गया तब हम 9 लोग पूरी तरह नंगे हो गये. 6 मर्दों ने मिलकर एक ही बिस्तर पर हम तीनो औरतों की जम कर चुदाई की. एक एक औरत को दो दो आदमी चोद रहे थे. कोई हमारी चूत मार रहा था तो कोई गांड मार रहा था या मुँह चोद रहा था. मैं भाभी की चुदाई देख देख कर अपनी बुर चुदा रही थी, तो भाभी अपनी चूत और गांड मे एक साथ लण्ड लिये अपनी सास की चुदाई देख रही थी. बदल बदल के उन 6 आदमीयों ने हम 3 औरतों को चोद चोदकर बर्बाद कर दिया. हमारे गर्भ मे उन्होने ना जाने कितनी बार अपना वीर्य भरा. रात के 2 बजे जाकर हम सब थक कर सो गये.

अगले दिन अपना सामान पैक कर के हम स्टेशन की तरफ़ चल पड़े. जाते समय मामाजी ने विश्वनाथजी को हाज़ीपुर आने का न्योता दिया जिसे उन्होने खुशी खुशी मान लिया.

ट्रेन मे ज्यादा भीड़ नही थी. हम सब एक खाली कूपे मे बैठ गये.

ट्रेन चलने पर मामाजी बोले, "देखो जो कुछ सोनपुर मे हुआ वह बात यहीं रह जायेगी. पर हाज़ीपुर

जाकर हमें बहुत ध्यान से चलना पड़ेगा. किसी को भनक भी पड़ गयी तो गज़ब हो जायेगा."

भाभी नखरा करके बोली, "तो क्या बाबूजी, हम घर मे मज़ा नही कर पायेंगे? आपसे बिना चुदे तो मैं एक दिन भी नही रह पाऊंगी!"
मामाजी- "अरे नही बहु, हम मज़ा तो करेंगे. पर छुपके करना पड़ेगा. घर मे बलराम है, किशन है, नौकर रामु और उसकी जोरु भी है..."
भाभी- "देवरजी (किशन) को तो मै सम्भाल लूंगी!"
मामाजी- "क्या मतलब?"
भाभी- "बाबूजी, यही तो उम्र है देवरजी की जवानी का मज़ा लेने के लिये! देखिये कैसे दो ही दिनो मे मै उसे मेरी चूत मारने के लिये पागल कर देती हूँ! फिर मै आपसे चुदुंगी तो वह कुछ नही बोलेंगे."
मामाजी- "बहु, तू तो एकदम रांड बन गयी है सोनपुर आ के! मेरे छोटे बेटे को भी नही छोड़ेगी?"
भाभी- "अरे छोड़िये ना, बाबूजी! सोनपुर मे कितना मज़ा आया खुलकर चोदा-चोदी करने मे. हाज़ीपुर जाकर मैं छुपते-छुपाते नही चुदाने वाली. मुझे बिलकुल मज़ा नही आयेगा."
मामीजी- "ठीक ही तो कह रही है बहु! किशन अब बड़ा हो गया है. घर मे चूत नही मिलेगी तो गाँव की औरतों पर मुँह मारने लगेगा. घर की बात घर मे ही रहे तो अच्छा है. किसी को क्या पता चलेगा कि भाभी देवर से चुदवा रही है?"
मामाजी- "वह तो ठीक है कौशल्या, पर रामु का क्या करेंगे. वह तो घर का आदमी नही है."
भाभी- "वह भी आप मुझ पर छोड़ दीजिये, बाबूजी! पहले मै रामु को पटा कर उससे चुदवा लूंगी. वैसे भी वह हर वक्त मेरी गोलाईयों को घूरता रहता है. फिर उसकी जोरु को पटाकर पहले देवरजी और फिर आपसे चुदवा दूंगी. फिर रामु अपना मुँह नही खोल पायेगा."
मामाजी- "अरे बहु, तूने तो सब कुछ सोच रखा है रे! सच, बहु हो तो ऐसी, क्यों कौशल्या? वैसे रामू की जोरु गुलाबी है बहुत कड़क माल! चोली मे उसके जवान चूचियों को देख कर मेरा तो लण्ड खड़ा हो जाता है. कैसे चूतड़ मटका मटका कर नाज़ से चलती है. उसे पटक कर चोद सकूं तो मज़ा ही आ जाये!"
भाभी- "बाबूजी आप मुझे थोड़ा वक्त दीजिये. जल्दी ही आप गुलाबी को उसके पति के सामने पटक कर चोद सकेंगे!"

सब लोग आने वाले दिनो के मज़े के बारे मे सोच कर खुश हो रहे थे. मैने कबाब मे हड्डी फेंक कर कहा, "आप लोग बलराम भईया को तो भूल ही गये! जब वह देखेंगे कि उनकी प्यारी बीवी अपने ससुर, देवर, और नौकर से सामुहिक चुदाई खा रही है, तो वह क्या बैठकर अपना लौड़ा हिलायेंगे? वह तो थाने मे जाकर आप सब पर केस ठोक देंगे! फिर जेल की चक्की पीसना सब

लोग!"

मामीजी मुसकुराकर बोली, "मेरे बलराम को मैं सम्भाल लूंगी!"

"आप सम्भाल लेंगी!!" हम सब ने हैरान होकर मामीजी की तरफ़ देखा.

मामीजी- "सब लोग मुझे ऐसे क्या देख रहे हो? तुम सब ने अपना अपना इंतजाम कर लिया. बहु को चार चार लौड़े मिलेंगे. मुझे क्या मन नही करता सोनपुर की तरह सामुहिक ठुकाई खाने का?"
मामाजी- "तुम्हारे लिये मैं हूँ ना, कौशल्या! और रामु भी तो होगा."
मामीजी- "दो से मेरा क्या होगा? और तुम्हारा लण्ड तो मैं बरसों से ले रही हूँ."
मामाजी- "पर बलराम तुम्हारा अपना बेटा है, कौशल्या! यह तुम क्या कह रही हो?"
मामीजी- "तुम तो जी कुछ बोलो ही मत! हफ़्ते भर से अपनी सगी भांजी की चूत मार रहे हो, और यहाँ शराफ़त की माँ चुदा रहे हो!"
मामाजी- "कौशल्या, मामा-भांजी की चुदाई अलग बात है. पर तुम अपने बेटों से चुदवाने जैसी घिनौनी बात सोच भी कैसे सकती हो!"
मामीजी- "क्यों जी, तुम्हे सही-गलत का ठेका किसने दिया है? तुम्हारी बीवी और बहु हफ़्ते भर से रंडीयों की तरह सब से चुदती रही तब तुमने कुछ भी नही कहा. तुम्हारी बहु घर जा के अपने देवर और घर के नौकर से चुदवाने का कार्यक्रम बनाये बैठी है, पर तुम कुछ नही कह रहे हो. क्यों? क्योंकि तुम्हे भी अपनी हवस पूरी करने का मौका मिल रहा है. हमारी कोई बेटी होती तो मुझे पूरा यकीन है कि तुम अपनी हवस मिटाने के लिये उसे भी बर्बाद करके छोड़ते. तो मैं क्या गलत कर रही हूँ? मुझे अपने दो जवान पठ्ठों जैसे बेटों से चुदवाने का मन कर रहा है. देखती हूँ तुम कैसे मुझे रोकते हो!"

मैने झगड़ा मिटाने के लिये कहा, "मामाजी, मामी ठीक ही तो कह रही हैं. सोनपुर मे हम सब ने जो अय्याशियाँ की हैं, उसके बाद हमे मामीजी को कुछ कहने का हक नही बनता. जिसको जो करने मे मज़ा मिलता है उसे वह करने देना चाहिये."
भाभी- "वह सब तो ठीक है, माँ, पर आप यह सब करेंगी कैसे?"
मामीजी- "वह मुझ पर छोड़ बहु! बस तू गुलाबी को एक बार बलराम से चुदाने की व्यवस्था कर देना. फिर जैसा मैं कहूँ वैसा ही करना. जल्दी ही मैं अपने दोनो बेटों से अपना बिस्तर गरम करने लगुंगी. और तुम सब को भी घर मे खुल कर चुदाई करने की पूरी आज़ादी हो जायेगी."

यह सुन कर सब बहुत खुश हो गये. मामाजी ने भी और कोई आपत्ती नही की. पर मैने कहा,

"आप सब तो हाज़ीपुर जाकर बहुत मज़े करेंगे. पर मेरा क्या होगा? घर जाने के बाद माँ और पिताजी मुझे लण्ड सूँघने का भी मौका नही देंगे! मैं तो बिना चुदाई के मर ही जाऊंगी!"

मामाजी बोले, "अरे बिटिया, हाज़ीपुर जाकर हम तुझे भूल थोड़े ही जायेंगे? हर 2-3 महीने मे तुझे अपने यहाँ बुला लेंगे. तू 1-2 हफ़्ते मज़े करके वापस अपने घर चली जाना!"
मैं- "उससे मेरा क्या होगा मामाजी! मुझे तो अब चुदाई की लत लग गयी है. मुझे तो रोज़ 2-3 लण्ड चाहिये!"
भाभी- "उदास मत हो, वीणा! तेरे लिये भी मैने कुछ सोच रखा है."
मैं- "क्या भाभी?"
भाभी- "समय आने पर बताऊंगी. पर अफ़्सोस, अभी तो कुछ दिन तुझे उपवासी रहना पड़ेगा."

इस तरह बातें करते करते हाज़ीपुर स्टेशन आ गया. मामीजी और भाभी उतर गयीं. मामाजी मुझे मेरे घर तक छोड़ कर अगले दिन हाज़ीपुर चले गये. और इस तरह मेरी मेले की सैर समाप्त हुई.

(समाप्त)

© Bicks and Trishna 2017

उपसंहार

प्रिय पाठकों,

मेरी कहानी "**मेले के रंग सास, बहु और ननद के संग**" यहीं समाप्त होती है. आशा है आप सब को पढ़कर बहुत आनंद आया.

मीना भाभी और ननद वीणा की कहानी यहीं खत्म नही होती है. अपने गांव लौटने के बाद दोनो और क्या क्या कारनामें करतीं हैं? क्या मीना भाभी की योजना सफ़ल होती है? इन दोनो चुदक्कड़ औरतों की आगे की कहानी आप ननद-भाभी सीरीज़ के अगले उपन्यास "**गांव के रंग सास, ससुर, और बहु के संग**" में पढ़ सकते हैं.

आपकी तृष्णा

© Bicks and Trishna 2017

About the Author

Trishna loves to read good erotica, especially in Hindi and Bengali. But it's difficult getting good erotica nowadays. So she decided to write some herself. If you have the same tastes as she has, you'll perhaps enjoy her stories.

Trishna does not write short stories. Her stories are long running and take their time to build-up. They are mostly plot, character, and conversation driven. If you're looking for a quick bang for your buck, you'll likely become impatient with the pace.

Usual themes in Trishna's stories include Incest, Adultery, Cuckold, Gangbang, Group Sex, Orgy, Reluctant, Pregnant, Lesbian, Humiliation, and Bisexual. And yes, some humour and suspense.

Trishna's stories usually do not include death, snuff, violent rape, sadism, scat, extreme pedophilia, and such like. Basically, in her stories everyone lives happily ever after. Sort of like romances, but a lot more fun.

Trishna welcomes your comments at **trishna321@yahoo.com**

Stay updated on Trishna's work at **http://www.asstr.org/~Trishna/**

© Bicks and Trishna 2017